तेरा हिज्र मेरा नसीब है

हिंदी कविता संग्रह

जे पी सिँह "साहिर"

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © JP Singh "Sahir" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

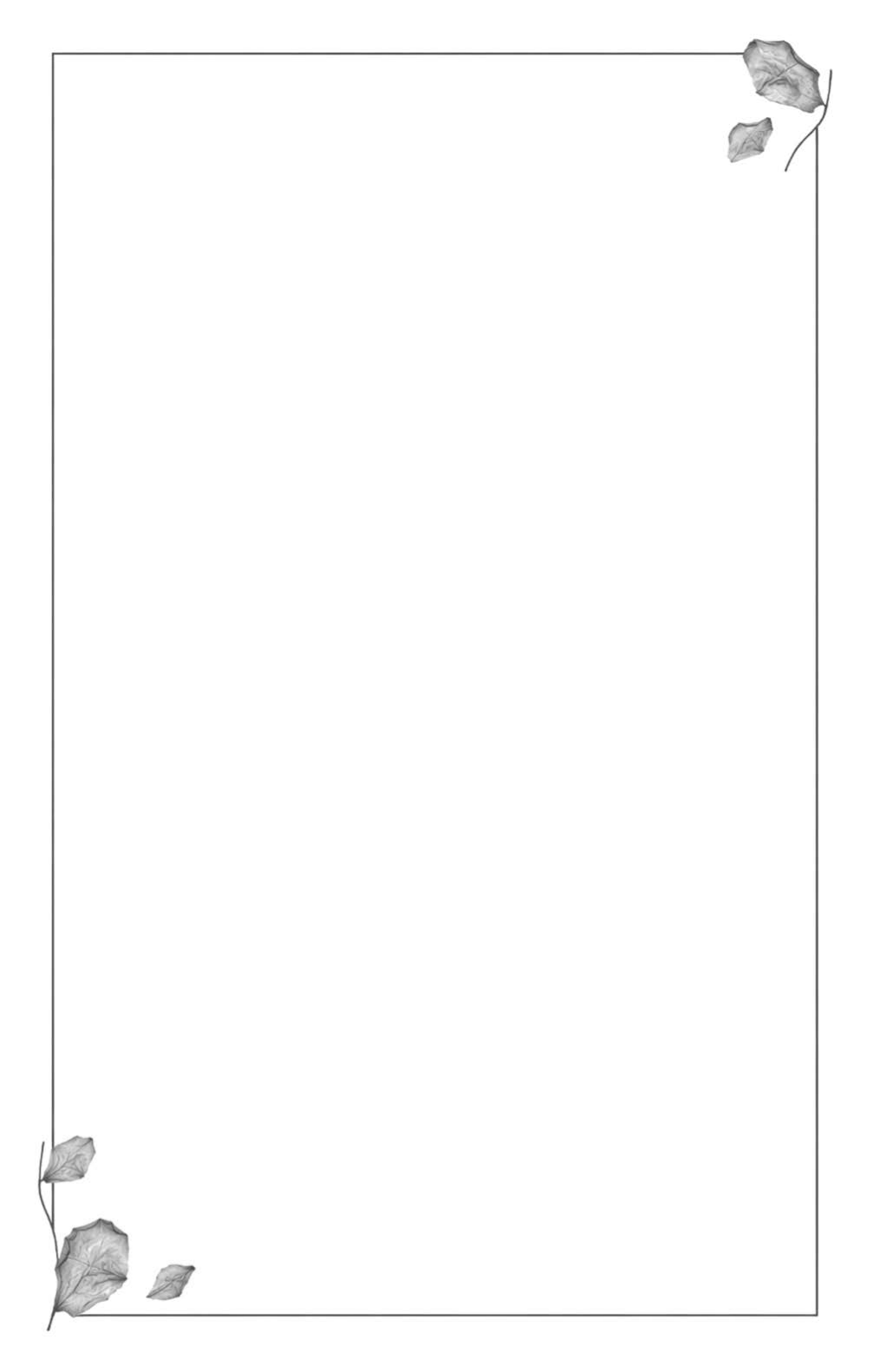
ISBN: 978-81-6744-539-1

Cover design: Shariq Ansari
Typesetting: Simran Maurya

First Edition: September 2026

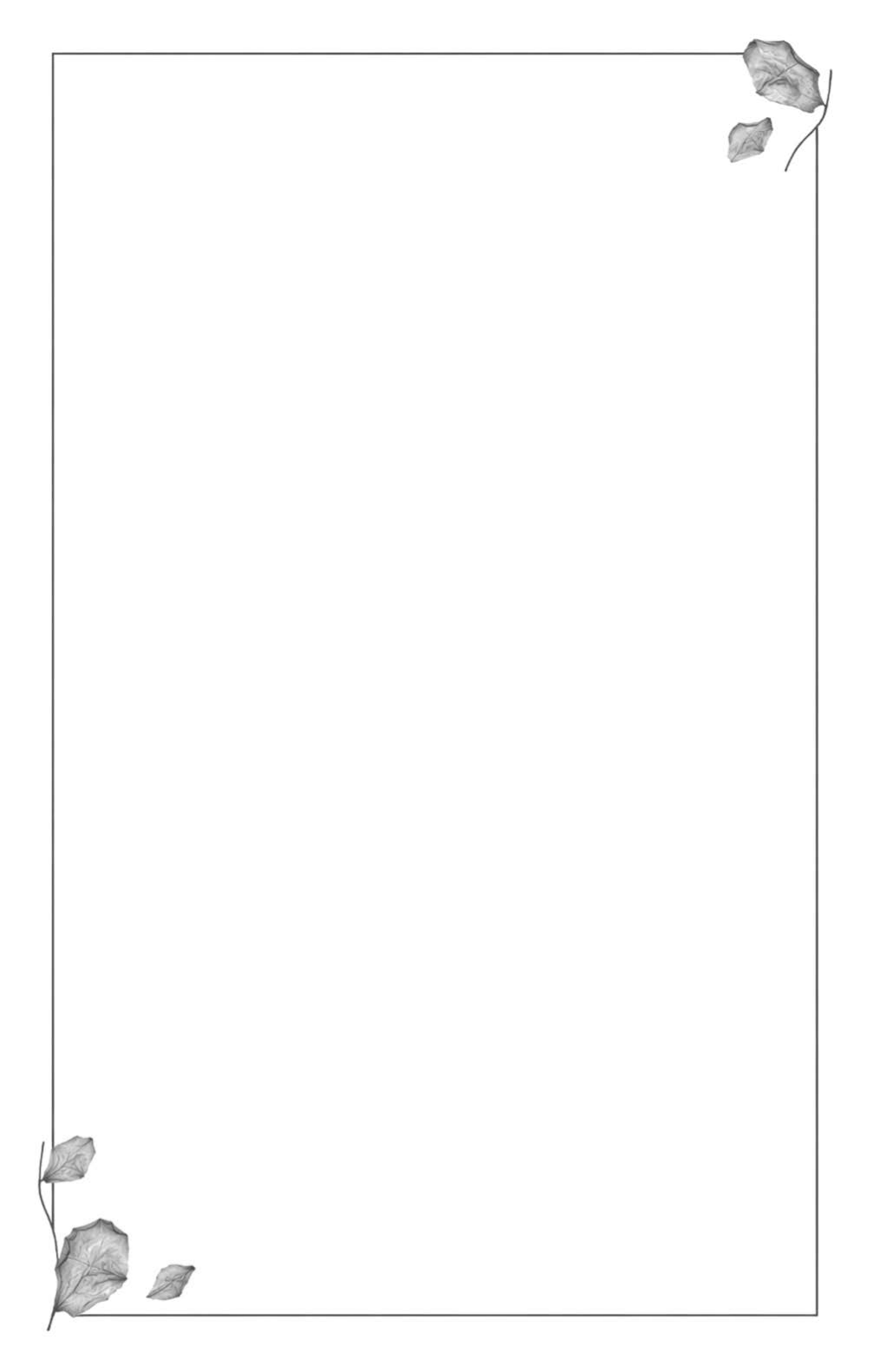
समर्पण

मेरी बच्ची, मेरी दोस्त, मेरी इल्हाम की देवी मेरी सरस्वती,
मेरी म्यूज़, मेरी महबूबा निवेदिता को समर्पित



आभार

निवेदिता, तुम इस जन्म में मेरी रूह को इतने क़रीब से छूकर अगर न गुज़री होती, तो मेरी रूह कभी बेदार न हो पाती। मेरी रूह को इर्तिक़ा की अगली मँज़िल पर पहुँचने में मदद करने के लिए तुम्हारा शुक्रिया ऐ दोस्त।



अनुक्रमणिका

तज़ब्ज़ब 1
तख़य्युल 4
बेक़रारी 5
मुहब्बत 7
तर्के-त'अल्लुक़ 9
फ़ुरक़त 11
मुहब्बत २ 13
पुनर्जन्म 14
याद 16
एहवाल 18
रिश्ता 20
सोच 21
बेहिस 23
ग्लेशियर 24
दर्दे-महरूमी 25
मोहिंजोदाड़ो 27
आइस एज 28
मौसमे-ग़म 29
अज़ीयत 31
दर्द 32

ख़्वाब 34
ज़ख़्म और दर्द 35
रात 36
सोचों का जँगल 37
हसरते-दीदार 38
हक़ीक़त 39
हिज्र 41
वैक्यूम 42
ख़ामोश मुहब्बत 43
सोशल डिस्टैंसिंग 44
बेबसी 45
ज़िन्दगी 46
ख़ामोशी 47
मैसेज 48
तुम 50
नाराज़गी 51
बेहतरीन अमल 52
तगारग 53
इल्तिजा 55
कहानी 56
ख़बर 57
कैमिस्ट्री 58
रियाज़ी 59
वस्ल 60

तज़ब्ज़ब

अजब से इक तज़ब्ज़ब में घिरा हूँ मैं कई दिन से
समझ में कुछ नहीं आता करुँ क्या सरफिरे दिल का
मैं तुझको देखकर पहली नज़र में प्यार कर बैठा
लगा तू मेरी ख़ातिर ही जहाँ में आई हो जैसे
उमंडते प्यार के सैलाब में बहने लगा हूँ मैं
मेरा हर पल गुज़रता है फ़क़त तेरे ख़्यालों में
तेरे दीदार की हसरत लिए दिन भर भटकता हूँ
न शब को नींद आती है न दिन को चैन पड़ता है
अजब सी बेक़रारी मैं लिए फिरता हूँ इस दिल में
कभी मैं सोचता हूँ तुझसे कह डालूँ ये हाले-दिल
मगर फिर सोचता हूँ तू बुरा न मान ले इस का
मेरी हालत मगर ऐसी है कि बेचैन रहता हूँ
न कह सकता हूँ तुझसे न कहे बिन चैन पड़ता है
मेरा दिल ये भी कहता है कि तू ख़ुद ही समझ लेगी
मुहब्बत आ ही जाती है नज़र माशूक़ को अक्सर
या लहजे से कभी अन्दाज़ से ज़ाहिर हो ही जाती है
यक़ीं है एक दिन तुझको भी ये एहसास तो होगा

कि तुझको चाहता हूँ मैं बड़ी ही गहरी शिद्दत से
मगर जब तक तू समझे डर है कि न देर हो जाए
मेरी उम्मीद भी यूँ रफ़्ता-रफ़्ता मर ही न जाए
या इक मायूसी आकर घर बना ले मेरे इस दिल में
कि जिसमें जुज़ तेरे अरसे से कोई भी नहीं रहता
अगर ऐसा हुआ तो दिल मेरा ये सह न पाएगा
मुहब्बत गर तेरी न पा सका तो ये तेरा आशिक़
तुझे बतलाऊँ कि इक दिन यक़ीनन मर ही जाएगा
यक़ीं क्या बाद मेरे भी तुझे एहसास हो न हो
मेरा ये प्यार बस नाकाम होकर ही न रह जाए
तो ये सोचा है मैंने कि तुझे बतला ही दूँ ख़ुद ही
मैं तुझसे प्यार करता हूँ मुझे तुझसे मुहब्बत है
बड़ी छोटी सी होती है जहाँ में ज़िन्दगी अपनी
और इस छोटे से वक़्फ़े में अगर कुछ दिल में रह जाए
तो इक पूरी की पूरी ज़िन्दगी फिर जीनी पड़ती है
बहुत मुमकिन है फिर उस ज़िन्दगी में जब मिलें हम तुम
तो बरसों तक न पहचाने मुझे तू और तुझको मैं
है मुमकिन ये भी कि हम इक जगह पर एक ही वक़्त
एक मुल्क में, इक शहर की इक गली में ही न पैदा हों
भटकते ही फिरें हम ज़िन्दगी भर उस जन्म में भी
तो क्यों न इस जन्म में ही करें इज़हार जज़्बों का

करें तस्लीम कि हम एक दूजे के लिए ही हैं
गले मिलकर मुहब्बत में मुहब्बत को क़ुबूलें हम
मुहब्बत को मुकम्मल करके जी लें ये जन्म अपना
तो फिर भटकेंगे न हम इस क़दर ही अगले जन्मों में
इसी ही जन्म में क्यों न मुहब्बत यूँ मुकम्मल हो

तख़य्युल

ये सारा दिन तुझे ही सोचना और सोचते रहना
ख़्यालों में तुझे ही देखना और देखते रहना
ये क्या है क्यों है आख़िर किसलिए होता है ये सब कुछ
जहाँ में काम दूजा कुछ नहीं है और क्या मुझको
मगर फिर सोचता हूँ जिसको दुनिया काम कहती है
असल में काम वो बिल्कुल नहीं है देखा जाए तो
वो फ़क़त है रोज़गार इक चन्द पैसों के लिए
जहाँ में काम कोई है अगर तो बस मुहब्बत है
मुहब्बत से नहीं बढ़कर है कोई काम दुनिया में
मुहब्बत इसलिए करता हूँ कि तेरी इबादत है
जहाँ में जुज़ मुहब्बत और कुछ करने से क्या हासिल
तेरा दीदार ख़्वाबों में मेरी उजरत मेरा हासिल

बेक़रारी

किसी पर दिल के आ जाने को गर कहते मुहब्बत हैं
तो या अल्लाह मुझे समझाईयो ये क्या मुसीबत है
कि दिन को चैन पड़ता है न नींद आती है रातों को
हमेशा हर लम्हा हर वक़्त बस उसका हसीं चेहरा
तसव्वुर में मेरी आँखों के आगे हँसता रहता है
ज़ेहन के पर्दे पर हर पल मुसलसल फ़िल्म चलती है
कि जिसमें हर अदा उसकी दिखाई देती रहती है
ख़्यालों पर मेरे जैसे उसी का बोल-बाला है
कि उसके बिन कभी कुछ भी नज़र आता नहीं मुझको
कभी यूँ ही ज़रा सी आँख लग जाए अचानक ही
तो वो ख़्वाबों पे मेरे क़ब्ज़ा करके बैठी होती है
कि यानि सोचूँ मैं कुछ तो फ़क़त उसको ही सोचूँ मैं
अगर ख़्वाबों में देखूँ तो फ़क़त उसको ही देखूँ मैं
मगर ये क्या क़यामत है कि वो मुझको
असल में क्यों नहीं मिलती
फ़क़त ख़्वाबों ख़्यालों में ही होती हैं मुलाक़ातें
मेरा हर दिन गुज़रता है भला क्यों वस्ल की चाह में

मेरी हर शब शबे-फ़ुरक़त ही बन जाती है क्यों आख़िर
मुहब्बत गर यही है तो यक़ीनन जानलेवा है
कहो उससे कि मुझको उससे कुछ ऐसी मुहब्बत है
कि उसके बिन कभी इक पल रहा जाता नहीं मुझसे
उसे भी तो ये हो मालूम उसको चाहता हूँ मैं
उसे भी तो लगे ऐसा कि कोई उसकी चाहत में
उसे इक बार मिलने को हुआ जाता है दीवाना
तभी शायद उसे एहसास हो मेरी मुहब्बत का
गुज़रती है जो इस दिल पर उसी की गहरी शिद्दत का
तो शायद उसको भी मुझसे मुहब्बत ऐसी हो जाए
कटे न एक पल उसका कभी मेरी जुदाई में
वो मुझसे वस्ल की ख़ातिर दुआएँ माँग ले तुझसे
कि जैसे उसको पाने की दुआएँ मैंने माँगी थीं

मुहब्बत

तेरा चेहरा भी कुछ कुछ भूलता जाता हूँ मैं अब तो
तुझे देखे हुए भी इक ज़माना हो चला है
तेरे मैसेज भी अब आते नहीं हैं फ़ोन पर मेरे
पहले की तरह मेरी किसी भी पोस्ट पर तू
लाईक या कमेंट नहीं करती है अब बिल्कुल
ऐसा तो नहीं ख़फ़ा होकर मुझे ब्लॉक कर दिया हो तूने
ख़फ़ा होना तेरा यूँ हो भी सकता है कि जायज़ हो
मगर मैंने कहीं ऐसा तो कुछ भी ही नहीं कहा तुझसे
कि तू नाराज़ हो कर तोड़ ले मुझसे त'अल्लुक़
कहा भी है अगर तो इसलिए कि है वही सच भी
मैं क्यों कर झूठ बोलूँ कि नहीं कोई उन्स है तुझसे
मुझे तू अच्छी लगती है तो इसमें झूठ क्या है बोल
तुझे शायद ये अच्छा न लगा होगा कि मेरी उम्र ज़्यादा है
कि मैं इस उम्र में भी ऐसा कैसे सोच सकता हूँ
तुझे बतलाऊँ मेरी जान कि ये उम्र इन्सानी तसव्वुर है
मुहब्बत है मगर इन्सान को अल्लाह का इक तोहफ़ा
मुहब्बत का उम्र से कोई ताल्लुक़ था कभी न है
मुहब्बत वाले दिल इकदम जवाँ रहते हमेशा हैं
मुहब्बत ही वजह भी है ज़रिया भी है जिससे

हो सकी तख़्लीक़ है कायनात ये सारी
मगर ये तोहफ़ा अल्लाह का सबको ऐसे ही नहीं मिलता
निकलकर मुआशरती बन्दिशों के क़ैदख़ानों से
तू इन पाबन्दियों से आके बाहर देख तो इक बार
मुहब्बत में तसव्वुर ज़मानो-मकाँ का कोई भी मानी नहीं रखता
मुहब्बत यूँ भी है ख़ालिस मुक़द्दस जज़्बा-ए-रूहानी
इसे हम जोड़कर जिस्मों से कितनी ग़लती करते हैं
कि जिस्मानी मुहब्बत चन्द रोज़ा तहवारे-हवस ही है
रूहानी इश्क़ लेकिन एक पूजा है इबादत है
मुहब्बत रूहों में होती है जिस्मों में नहीं होती
जिस्म तो पैदा होते, मरते हैं, बूढ़े भी होते हैं
मुहब्बत न कभी मरती है न बूढ़ी ही होती है
मुझे लगता है पिछले जन्म का रिश्ता है कुछ अपना
तुझे मिलकर अजब सी इक ख़ुशी महसूस होती है
उदासी देखकर तेरी मुझे तकलीफ़ होती है
तू मेरी रूह का ही हो न हो कोई ख़ास हिस्सा है
कि ऐसा उन्स यूँ ही तो नहीं हो जाता रूहों में
पुराने जन्मों के रिश्तों का ही है हाथ कुछ इसमें
वगरना हम कभी इक दूसरे से मिल नहीं पाते
मिले हैं हम अगर तो यूँ ही बस मिलती रहो मुझसे
बहुत मुमकिन है इक दिन यूँ ही हमको इल्म हो जाए
कि आख़िर कौन हैं हम और यहाँ पर क्यों मिले हैं हम

तर्के-त'अल्लुक़

बहुत रोते हुए मुझसे कहा था तुमने कि अब न मिलूँ तुमसे
मेरी आँखों के आगे से मगर वो आज भी मन्ज़र नहीं जाता
हुआ क्या था जो तुमने एकतरफ़ा फ़ैसला करके
त'अल्लुक़ तर्क कर डाला था बिन पूछे या बतलाए
तुम्हारे वास्ते भी ये यक़ीनन बहुत मुश्किल फ़ैसला होगा
मगर जो मुझपे गुज़री है ब्याँ भी कर नहीं सकता
तू मेरी ज़िन्दगी का एक अहमो-ख़ास हिस्सा थी
तुझे मैंने कभी ख़ुद से अलहदा समझा ही न था
तेरी तर्क-ए-त'अल्लुक़ की मगर उस ज़िद ने मुझको मार ही डाला
भला तेरे बिना जीना मेरा क्या ख़ाक जीना है
तुझे शायद लगा होगा कि तू ऐसा करेगी गर
तो मैं भी रफ़्ता रफ़्ता तुझको इक दिन भूल जाऊँगा
मगर तुझको पता भी है कि मेरे वास्ते आसाँ नहीं है ये
मेरी हस्ती के ताने-बाने में कुछ यूँ बुनी है तू
कि तुझको ख़ुद से बाहर करने की पुरज़ोर कोशिश में
मैं ख़ुद सारे का सारा ही उधड़ कर तागा तागा हो गया होता
मेरी हिम्मत नहीं थी कि भुलाने की तुझे कोशिश भी कर सकता

तू मेरे जिस्मो-जाँ में, ज़ेहन में, दिल में, तसव्वुर में
हस्बे-मामूल ही रहती है पहले की तरह बिल्कुल
तुझे इक पल को भी मैं भूल ही पाया नहीं अब तक
मगर हाँ जब से तू यूँ हो गई है दूर अब मुझसे
बहुत मायूस रहता हूँ मुझे कोई भी शय अच्छी नहीं लगती
मैं शायद बुझ रहा हूँ रफ़्ता रफ़्ता अपने ही अन्दर
मुझे सब लोग कहते हैं मैं पहले सा नहीं हूँ अब
न वो दिलचस्प बातें हैं न वो नग़मे ही हैं लब पर
बज़ाहिर चाहे ज़िन्दा हूँ मगर सच में इसे ज़िन्दा नहीं कहते
मैं अक्सर सोचता हूँ कि तुझे भी याद तो आता ही हूँगा मैं
भुला पाना मुझे तेरे लिए भी तो कहाँ आसाँ रहा होगा
कभी फिर यूँ भी लगता है कि तूने यूँ ही बेमन से
मुझे ये कह दिया होगा कि तुमसे न मिलूँ बिल्कुल
कभी जी में ये आता है कि तुझसे मिलने जा आऊँ
तेरा एहवाल भी पूछूँ कुछ अपना हाल कह आऊँ
मगर ये सोचकर हर बार रह जाता हूँ मिलने से
कि शायद दूर रह कर मुझसे तू ख़ुश हो, बहुत ख़ुश हो
तुझे ख़ुश देखना ही तो मेरे जीने का मक़सद है
नज़र के सामने हो तू या नज़रों से बहुत ही दूर
जुदा रहकर अगर मुझसे तू ख़ुश है मैं भी फिर ख़ुश हूँ
मेरी अपनी ख़ुशी से लाख बढ़कर है मुझे तेरी ख़ुशी जानाँ

फ़ुरक़त

तेरा यादों में आना और मेरी सोच में रहना
मुझे अच्छा तो लगता है मगर मैं कब तलक
रातों को जग जग कर तुम्हारी राह देखूँगा
मुझे मन्ज़ूर है फ़ुरक़त में तेरी रात दिन बेचैन हो रहना
तड़पना, सिसकना, रोना कभी नाशाद हो रहना
मगर इस बात का जानाँ कभी कोई हल भी निकले ना
तुझे तो इल्म ही बिल्कुल नहीं अब तक ज़रा सा भी
कि मैं किस दर्जा शिद्दत से मुहब्बत करता हूँ तुझसे
कि मैं तेरी मुहब्बत में महव होकर हुआ जाता हूँ दीवाना
किए जाता हूँ मैं ख़ुद पर तशद्दुद तेरी चाहत में
कि कितनी रातें गुज़री हैं ज़रा सोया नहीं हूँ मैं
मेरी तक़दीर में दुख के अलावा कुछ नहीं है क्या
मैं जितना सोचता हूँ तुझको उतना ग़मज़दा हूँ मैं
तेरी फ़ुरक़त का ग़म बर्दाश्त ही होता नहीं मुझसे
ज़ब्त कितना और दिल पर जब्र यूँ कब तक करूँ
आके तू इक रोज़ मुझसे मिल ही क्यों जाती नहीं
तप रहा हूँ मैं तेरी फ़ुरक़त के ग़म में रात दिन

मेरी सोचों की इस ग़मगीन दुनिया से निकलकर

आ कभी तू और आ के लग जा सीने से

मेरे दिल को कलेजे को ज़रा ठँडक मिले जानाँ

मुहब्बत २

तुझे तो रात दिन दिल से लगा के मैंने रक्खा है
तुझे हर वक़्त यादों में सजा के मैंने रक्खा है
तू मेरी ज़िन्दगी है तुझको ये मालूम है लेकिन
तू मुझसे दूर रहती है कभी मिलने नहीं आती
तुझे देखूँ तो मेरे दिल में लाखों फूल खिलते हैं
तेरे दिल में मुहब्बत की कली खिलने नहीं पाती
ये क्यों है कि तुम्हारा प्यार मुझको मिल नहीं सकता
वजह कुछ भी हो पर मेरा इरादा हिल नहीं सकता
मैं तुझसे प्यार करता हूँ ये इक ऐसी हक़ीक़त है
कि मैं तसलीम करता हूँ मुझे तुझसे मुहब्बत है
कभी ऐ ज़िन्दगी तू भी मेरे जज़्बात को समझे
मेरी मजबूरियाँ समझे मेरे हालात को समझे
मैं पागल हो चुका हूँ इस क़दर तेरी मुहब्बत में
नहीं होता है मुझसे ज़ब्त इस फ़ुरक़त की शिद्दत में
गुज़र जाती है यूँ ही रात न इक पल भी सोता हूँ
लिपट कर तेरी यादों से मैं सारी रात रोता हूँ

पुनर्जन्म

न जाने कैसे इतनी बदनसीबी लिख दी मेरे नाम अल्लाह ने
कि तुझको देखा भी मिल भी लिया पर पा सका न मैं
कोई साज़िश रची होगी यहाँ तक़दीर ने मेरे ख़िलाफ़
और मैं नादाँ समझता ये रहा कि ये भी कोई इम्तिहाँ होगा
तुझे देखा था जब मुझको तभी अपनी लगी थी तू
मेरे दिल के किसी गोशे में जन्मों से बसी थी तू
बहुत सोचा तो इक दिन ख़्वाब में देखा कि तुझको जानता हूँ मैं
मेरे पिछले जनम में मेरी महबूबा रही है तू
कि अपनी जान से ज़्यादा तू मुझसे प्यार करती थी
मगर कुछ तँगदिल लोगों ने मुझको क़त्ल कर डाला
यहाँ देखा तुझे तो धीरे-धीरे सब समझ आया
मैं अल्लाह की मेहरबानी पे ख़ुश था और हैराँ भी
मुझे फिर से तुम्हारे साथ मिलवाया जो था उसने
मैं इक दिन बात ये सारी ही तुझसे कहने वाला था
मगर फिर यूँ हुआ कि याँ भी कुछ ख़ुदग़र्ज़ लोगों ने
हमारे बीच बेवजह ही कितनी दूरियाँ कर दीं
और इससे पहले कि मैं तुझको बतलाता तू मेरी कौन लगती है

ग़लतफ़हमी में ही तूने त'अल्लुक़ तोड़ डाला था
तेरा वो फ़ैसला गरचे नहीं माक़ूल था बिल्कुल
मगर मैं ख़ुश हूँ गर तू तोड़ कर मुझसे त'अल्लुक़ बहुत ख़ुश है
तुझे ख़ुश देखना ही तो मेरा भी असल मक़सद है
अगर तू मिलती रहती तो किसी दिन मैं तुझे ये बात समझाता
कि याँ मिलना हमारा क़ुदरत की मस्लेहत का हिस्सा था
ख़ैर, अब इस जन्म में तो हम कभी इक हो न पाएँगे
तुमको मनाने, सब बताने के लिए मैं अब नहीं आ पाऊँगा
तुम्हें पाने की नाकामी लिए ही एक दिन मर जाऊँगा मैं बस
बिछड़ कर तुझसे यूँ हर पल जहन्नुम जी रहा हूँ मैं
मेरा ये जन्म शायद बस इसी एहसास की ख़ातिर हुआ होगा
मगर तू, हाँ, तुझे अगले जनम में गर कहीं मिल जाऊँ मैं यूँ ही
तो कोशिश बस यही करना कि तू मेरी तरह नाकाम मत होना
दर्द सह लेना, जहाँ से ही नहीं अल्लाह से लड़ जाना
मगर उससे यही कहना कि तेरी ज़िद है चाहे जो भी हो जाए
तू मुझको अब नहीं खोएगी बस पाकर रहेगी तू

याद

तुम्हारी याद धुँधलाने लगी है ज़ेहन में मेरे
तेरे चेहरे का वो जो अक्स बन जाता था तुझको सोचने भर से
वो कुछ कुछ फीका पड़ने लग गया है मेरी यादों में
वो दिन भी थे कि तू यूँ ख़ुद-ब-ख़ुद
आ जाया करती थी मेरी सोचों के आँगन में
ख़लल करती थी तेरी याद मेरे रोज़मर्रा में
ज़रूरी काम भी मैं वक़्त पर निपटा न सकता था
तुझे ही याद करना, सोचना ज़्यादा ज़रूरी था
कि मेरी बेक़रारी का मुदावा बस यही तो था
मगर तेरा तग़ाफ़ुल भारी पड़ता जा रहा है अब मेरे दिल पर
वो मेरी सोच के कैनवस पर उतर आते थे जो तेरे नक़ूश
भरा करता था जिनमें रँग मैं अपने तसव्वुर से
वो सारे रँग भी अब छूट कर घिसने लगे हैं
मेरी यादों की पट्टी पर हमेशा नक़्श रहता था तेरा चेहरा
मगर अब रफ़्ता रफ़्ता मिट रहा है अक्स उसका भी
मैं कोशिश बहुत करता हूँ वो तेरा दमकता चेहरा
मेरी यादों के आँगन से, मेरी सोचों के कैनवस पर

मेरी आँखों के आगे से कभी हँसता हुआ गुज़रे
मगर कोशिश भी करने पर बस अब इतना ही होता है
कि तेरे चेहरे का मद्धम सा इक ख़ाका ही बनता है
तेरा चेहरा तसव्वुर में कभी पूरा नहीं बनता
तू यूँ ही आ कभी फिर से ख़्यालों में मेरे
पूरी की पूरी पहले की तरह जानाँ
तुझे जी भर के देखूँ और मुकम्मल मैं भी हो जाऊँ

एहवाल

सोच रहा था मैं कि तुमको फ़ोन करूँ
पूछूँ तुमसे कैसी हो तुम क्या करती हो
भूल गई हो या कि याद भी करती हो
कभी सोचती हो क्या मेरे बारे में
या रहती हो बिज़ी यूँ ही दिन सारे में
ख़्वाब मेरे लेकर नींदें मुमकिन करती हो
या फिर जागे जागे रातें दिन करती हो
कभी तो आता होगा तुम्हें ख़्याल मेरा
कभी पूछती तो होगी तुम हाल मेरा
लोग तुम्हें बतलाते होंगे ठीक हूँ मैं
वो क्या जानें मरने के नज़दीक हूँ मैं
मैंने कभी किसी पर ज़ाहिर नहीं किया
पर तुमको यादों से बाहर नहीं किया
अब भी तुम मेरी यादों में बसती हो
अब भी मेरे ख़्वाबों में तुम हँसती हो
जागता हूँ तो मेरे सामने होती हो
सोता हूँ तो साथ मेरे ही सोती हो

तुमको ख़ुद से जुदा नहीं कर सकता हूँ

तुम बिन मैं जीता हूँ न मर सकता हूँ

कभी तुम्हें गर लगे कि बन्दा अच्छा था

बड़ी उम्र का था पर दिल का सच्चा था

हवस नहीं थी सिर्फ़ मुहब्बत करता था

जिस्म नहीं बस रूह से रग़बत करता था

कभी लगे ख़ुदग़र्ज़ नहीं था प्यार मेरा

कभी लगे गर मैं होता सरदार तेरा

तो बेझिझक चली आना तुम पास मेरे

मुन्तज़िर अब भी हैं तेरे ये सारे एहसास मेरे

रिश्ता

तुझे देखा था जब मैंने मुझे अपनी लगी थी तू
ये सच है देखते ही हो गया था प्यार भी तुझसे
लगा था जैसे तुझसे मेरा कई जन्मों का रिश्ता है
नई पहचान तो बिल्कुल नहीं थी तुझसे ये मेरी
ये तय है कि हमारे बीच कई जन्मों से रग़बत है
यही वजह है शायद कि मुझे तुझसे मुहब्बत है
ये मेरी रूह तेरी रूह को पहचान भी लेती
मगर धुँधला सा पर्दा बीच अपने सरसराता है
हमारे जिस्म हम दोनों की रूह के बीच आते हैं
कि जिस्मों के परे रूहें बड़ी धुँधली सी दिखती हैं
सुना है जिस्म ही तो रूहों के मिलने का ज़रिया हैं
हमें दुनियावी जिस्मों में ही इक दूजे को पाना है
ये शायद ठीक भी होगा मगर ये क्यों ज़रूरी है
कि तेरे जिस्म से होकर मैं तेरी रूह तक पहुँचूँ
तू मेरे जिस्म से होकर ही मेरी रूह तक पहुँचे
मुझे लगता है अपने जिस्म भी नज़रों का धोका हैं
हटा कर जिस्म अपने बीच से देखें अगर दोनों
यक़ीनन तू मुझे और मैं तुझे पहचान ही लूँगा
और अपने बीच का ये फ़ासला मुमकिन है मिट जाए

सोच

उसकी याद में जाग रहा हूँ
जागते जागते सोच रहा हूँ
वो भी मुझको सोच रही है
क्या वो भी अब जाग रही है
क्या कोई और भी है जुज़ मेरे
उसकी याद में जाग रहा है
उसके बारे सोच रहा है
क्या कोई और भी है जुज़ मेरे
जिसको कि वो सोच रही है
जिसकी सोच में जाग रही है
या फिर मैं ही जाग रहा हूँ
उसके बारे सोच रहा हूँ
वो बैड पर चुपचाप पड़ी है
गहरी नींद में सोई हुई है
मैं न उसकी सोच में ही हूँ
न उसकी यादों में ही हूँ
हो सकता है ख़्वाब में हो

और ख़्वाब में मुझको देख रही हो

जब सुबह सोकर उठेगी

मन्द मन्द मुस्काएगी

ख़्वाब की बातें याद करेगी

फिर वो मुझको सोचेगी

मैं भी उसको सोच सोच कर

जाने क्या क्या सोच रहा हूँ

बेहिस

बेहिस पड़ा हुआ था सदियों से मैं ख़ला में
पत्थर ही हो चुका था मेरा स्याह मादा
तुझको पता था इसमें मेरी जान कुछ बची थी
तेरे सर्द-ओ-तवील तग़ाफ़ुल के नीचे दबी
जो सदियों से बस मुर्दा पड़ी हुई थी
तू नूर बन के आई और अपनी इक शुआ से
पत्थर को तूने तोड़ा मुझे ज़िन्दा कर दिया था
बेदार हो गई जब मेरी रूह मैंने देखा
थे करोड़ों जिस्म जिनमें मैं मुन्तशिर हुआ था
हर जिस्म मेरा लेकिन तेरे गिर्द घूमता था
ये कशिश जो मुझको तेरी जानिब ही खींचती है
यही इश्क़ है जो क़ायम है दरमियान अपने
यही वजह है जो मुझको ज़िन्दा किए हुए है
मैं ये सोचता हूँ अक्सर कभी तू ख़फ़ा जो होकर
गर तोड़ दे त'अल्लुक़ मुँह मुझसे मोड़ ले तो
सातों जहाँ में मुझको कोई पनाह न देगा

ग्लेशियर

तुम्हारे हिज्र की हरारत इस दर्जा बढ़ गई कि
मेरे ज़ेहन में मुँजमिद मुहब्बत का ग्लेशियर
पल पल पिघल पिघल कर
आँखों से गँगा जमुना
इतनी बहा चुका है कि अब ख़ुश्क हो रहा है
माहौलियाती साँईंसदाँ कुछ ऐसा कह रहे हैं
शदीद बेक़रारी के दिनों में
ज़ेहनी दबाव इतना बढ़ जाता है कि
सब्र की बर्फ़ भी नहीं पड़ती
सिकुड़ता जा रहा है दिन ब दिन इस बर्फ़ का घेरा
वो ये भी कह रहे हैं दर्दे-हिज्र की हरारत
यूँ ही गर बढ़ती रही तो एक दिन
सारा का सारा ग्लेशियर ही पिघल कर
बह चलेगा आँखों की गँगा जमुना से
तुम्हारे हिज्र में रोने की वो आख़िरी रात होगी

दर्दे-महरूमी

बड़ी गर्मी थी मौसम में परेशाँ लोग थे सारे
दुआएँ कर रहे थे कि चले ठँडी हवा कुछ तो
कहीं से आए इक झोंका मिले राहत ज़रा सी ही
दुआ क़बूल हुई, चलने लगी ठँडी हवा
लगे छाने घने बादल, बदलने लग गया मौसम
मिली गर्मी से राहत कुछ ही पल के वास्ते लेकिन
कहीं बरसे बिना फिर यकबयक छटने लगे बादल
उड़ा कर ले गई वो ही हवा जो लाई थी उनको
मैं प्यासा था मुहब्बत का कई जन्मों से, सदियों से
सिवाए दर्दे-महरूमी नहीं था पास कुछ मेरे
दुआएँ माँगता फिरता था अल्लाह से कि ऐ मौला
मेरे दिल को भी कर दे तू अता थोड़ी मुहब्बत यूँ
तड़पते दिल को मिल जाए ज़रा सा ही सुकूँ मौला
बरस जाए कोई बदली मुहब्बत की मेरे दिल पर
मुझे आज़ाद कर दे दर्दे-महरूमी की शिद्दत से
दुआ क़बूल हुई, मिल गया हमदर्द इक मुझको
हवा ठँडी लगी चलने, सुकूने-दिल लगा मिलने

लगी छाने वो बदली मेरे दिल के तपते सहरा पर

मगर शायद ख़ुदा का शुक्र करने में कोताही हो गई मुझसे

अचानक छट गई बदली बदलने लग गया मौसम

मेरी क़िस्मत में शायद धूप ही लिखी थी दर्दों की

मोहिंजोदाड़ो

मेरी ज़िन्दगी में कभी
तुम्हारे होने का
इक ही सबूत
बस यादें ही थीं तुम्हारी
और वो सब रोज़ी-रोटी
रोज़गार की दुनियावी ज़रूरियात
मसरूफ़ियात, मुश्किलात की मिट्टी में
दब के रह गईं थीं
किसी पुरानी तहज़ीब की तरह
अब तुम आई ही हो तो
आओ मेरे ज़ख़्म कुरेदो
पपड़ी खुरचो मिट्टी खोदो
हो सकता है तुम्हारी उन यादों का
मुर्दा मोहिंजोदाड़ो फिर से ज़िन्दा हो जाए

आइस एज

तुम्हारी ठन्डी ख़ामोशी की
तवील आइस एज के तले
किसी पुरानी तहज़ीब की तरह
दबी पडी हैं
मेरी तमाम हसरतें
बस अब तो रहम करो
अपने तबस्सुम की धूप बरसाओ
पिघल जाने दो बरसों से जमी
ये ठन्डी ख़ामोशी की बर्फ़
कुछ तो बोलो, कुछ भी तो कहो मुझसे
पुकारोगी अगर तुम नाम से मुझको
यक़ीनन मैं ग़मों के ढेर से
फिर ज़िन्दा निकलूँगा

मौसमे-ग़म

कुछ दिन से वो घुटा घुटा था
कुछ न कहता था वो चुप चुप रहता था
जाने कितना दर्द लिए था वो दिल में
जाने कैसे ज़ब्त किए रहता था वो
साँसें भी वज़्नी थीं उसकी
चेहरे की रँगत भी लिस्सी-लिस्सी थी
कभी कभी ऐसा होता है
दर्द गुज़र जाता है हद से
दिल के दरवाज़ों के पीछे
इक सैलाब बँधा रहता है
हमदर्दी का एक लफ़्ज़ ही
ज़ब्त का बाँध उड़ा देता है
फिर जो होता है मत पूछो
कैसे रोता है मत पूछो
रात किसी ने पूछ लिया था
क्यों चुप चुप हो क्या वजह है
हमदर्दी के दो ही बोल

कभी कभी ख़ामोश दिलों की

गिरहें खोल के रख देते हैं

फूट फूट कर रोया मौसम सारी रात

लग कर गले आसमान के

धरती को जल थल कर डाला

सुबह हो गई तब भी टपक रहे थे आँसू

पेड़ों की शाखों से, घर के छज्जों से

खम्भों से, तारों से और एन्टीनों से

पत्ता-पत्ता रो रो कर बेहाल हुआ था

किसी को कुछ मालूम नहीं था

उस पर क्या क्या गुज़र रही थी

दर्द छुपाकर रखना कुछ आसान नहीं है

दिल पर वज़्नी वज़्नी पत्थर

रख कर जीना पड़ता है

अज़ीयत

जिसे तुम प्यार करते हो
वो गर बेवजह बतलाए
त'अल्लुक़ ख़त्म कर जाए
तुम्हारी कोशिशों के बाद भी
न राबिता रखे
तो ऐसे में कुछ ऐसा इन्तज़ाम हो जाए
कि आशिक़ एक पल भी न जिए
उस दम ही मर जाए
वो हर पल की अज़ीयत से तो बच जाए

दर्द

जहाँ कहीं भी है कुछ
छिला, कटा हुआ, टूटा हुआ
उधड़ा हुआ, उखड़ा हुआ
बिखरा हुआ, उजड़ा हुआ,
चुभता हुआ, खुबता हुआ
खोया हुआ, ढोया हुआ
गुज़रा हुआ, बिछुड़ा हुआ
वहीं पर दर्द है
रिसता हुआ, बहता हुआ
जहाँ कहीं भी है कुछ
बोया हुआ, उगता हुआ
खिलता हुआ, मिलता हुआ
बँधता हुआ, खिंचता हुआ
जुड़ता हुआ, जकड़ा हुआ
थामा हुआ, पकड़ा हुआ
जहाँ लगाव है, जुड़ाव है
जमाव है, ठहराव है

मुहब्बत है, कशिश है

वहीं पर इश्क़ है

ख़ामोश कुछ कहता हुआ

एक कशिश ने बाँध रखा है

जहाँ की एक इक शय को

यही है इश्क़, मुहब्बत यही है

मिट्टी, पानी, हवा, आस्माँ

पशु, ये पौधे और ये इन्साँ

इसी मुहब्बत में बँधकर ही

ज़िन्दा हैं और ख़ुश रहते हैं

जहाँ मुहब्बत है ख़ुशियाँ हैं

यही क़ायदा है क़ुदरत का

जहाँ मुहब्बत नहीं वहाँ पर

दर्द ही है तस्कीन नहीं है

दर्द-ओ-मुहब्बत का इक गहरा रिश्ता है

ख़्वाब

ख़्वाबों में आकर
तुम कितना तंग करती हो
छेड़ती हो, चिढ़ाती हो
और कभी चोरी से पीछे से आकर
रख आँखों पर हाथ पूछती हो
“बतलाओ तो कौन हूँ मैं”
मुझसे कभी लिपट जाती हो
कभी चूमने लगती हो
दिन में क्या होता है तुमको
बन कर एक हया की मूरत
देखके मुझको शर्माती हो
बात नहीं करती हो मुझसे
नज़र झुकाए चल देती हो

ज़ख़्म और दर्द

मैं दर्दों को मर जाने की
रोज़ दुआएँ देता हूँ
दर्द मगर ज़िन्दा रहते हैं
दर्द मेरे मरते ही नहीं हैं
दर्दों को ज़िन्दा रहने की आदत है
दर्द ज़ख़्म की गहराई तक
जाकर उसमें बस जाते हैं
ज़ख्म ग़िज़ा हैं दर्दों की
मैं ज़ख़्मों को भर जाने की
रोज़ दुआएँ देता हूँ
ज़ख़्म मगर भरते ही नहीं हैं
ज़ख़्म मेरे गहरे रहते हैं
ज़ख़्मों को गहरे रहने की आदत है
वो दर्दों को अपने अन्दर
रख कर ज़िन्दा रहते हैं
दर्द ग़िज़ा हैं ज़ख़्मों की

रात

रात मेरे सर चढ़ के जागती रहती है
ज़िद है मैं सोऊँगा तब ये सोएगी
इसको कुछ मालूम नहीं ये नादाँ है
नींद कहाँ आती है ग़म के मौसम में
मैं लिहाफ़ में घुसकर बस सोने का नाटक करता हूँ
मुझको सोता देख ये शायद सो जाए
ज़रा सी करवट भी बदलूँ जग जाती है
बैठ के मेरे सिरहाने सहलाती है
हल्के-हल्के वो मेरे पेशानी को
फ़िक्र की शिकनें मद्धम होने लगतीं हैं
दिन के आने से पहले हम दोनों ही सो जाते हैं

सोचों का जँगल

तेरी सोचों के जँगल में भटकता फिर रहा हूँ मैं
एक पल के वास्ते हासिल नहीं मुझको फ़राग़
जकड़े रहती हैं हमेशा इज़्तिराबी ज़ेहन को
तेरी चुभती हुई यादों की वो ऑक्टोपसी बाँहें
नहीं है छूटना इनसे मुझे न और कोई काम करना है
तेरी यादों में ही मुझको फ़क़त मसरूफ़ रहना है
तुझे ही सोचते रहना है बस मामूल अब मेरा
तेरी सोचों ने, यादों ने, तसव्वुर ने, ख़्यालों ने
बुना है गिर्द मेरे ज़ेहन के जो तारे-अँकबूत
उसी में ही फँसा आज़ाद भी महफ़ूज़ भी हूँ मैं
तेरी यादों के, सोचों के भँवर में डूब कर पाया
कि डूबा हूँ मैं जब से तब से मेरी साँस चलती है
कि तुझ पर मर मिटा हूँ जबसे ज़िन्दा हो गया हूँ मैं

हसरते-दीदार

तेरी हस्ती से ही मेरी हस्ती है
तेरे होने से ही है मेरा वजूद
तुझसे ही हाँ तुझसे ही हूँ मैं जानाँ
तू गर नहीं तो फिर मैं भी
कहीं नहीं हूँ मैं बस हूँ ही नहीं कहीं
तू बस मेरे सामने यूँ ही बैठी रह
नज़रों से इक पल भी दूर नहीं होना
बिन तेरे दीदार के सच्ची सुन जानाँ
रूह की प्यास नहीं बुझती मेरी
पेट नहीं भरता है मेरी आँखों का

हक़ीक़त

हालांकि ये सच नहीं है मगर
मैं सब को बताने की कोशिश करूँगा
कि ये ज़िन्दगी ख़ूबसूरत नहीं है
हालांकि ये सच नहीं है मगर
मैं तुमको बताने कि कोशिश करूँगा
मुझे तुझसे बिल्कुल मुहब्बत नहीं है
हालांकि ये सच नहीं है मगर
मैं ख़ुद को बताने कि कोशिश करूँगा
मुझे अब तुम्हारी ज़रूरत नहीं है
हालांकि ये सच नहीं है मगर
मैं रब को बताने की कोशिश करूँगा
कि अब मुझमें जीने की हिम्मत नहीं है
जैसे भी काटी हो मैंने मगर
मैं सबको बताने की कोशिश करूँगा
कि ये ज़िन्दगी ख़ूबसूरत बहुत है
जब भी लगेगा कि थकने लगा हूँ
मैं रब को बताने की कोशिश करूँगा

अभी मुझमें जीने की हिम्मत बहुत है

जी तो रहा हूँ मैं तेरे बग़ैर

मैं ख़ुद को बताने की कोशिश करूँगा

मुझे अब भी तेरी ज़रूरत बहुत है

मुझपे यक़ीं तुझको आए न आए

मैं तुझको बताने की कोशिश करूँगा

मुझे तुझसे सचमुच मुहब्बत बहुत है

हिज्र

हिज्र तेरा और फिर ग़मे-हिज्राँ
और उस पर कसरते-ग़मे-हिज्राँ
सहते सहते बन गया हूँ कोहे-ग़म
वो सारे दर्द, सारे दुख मुहब्बत के हैं मुझमें मुँजमिद
कभी तू करम कर मुझ पर तरस खा मेरी हालत पर
तबस्सुम से तू अपने एक दिन मुझ पर गिरा बिजली
मैं पिघलूँ, खुल के रो लूँ, अश्क बन कर ग़म मेरा
तुझ तक अगर पहुँचे, तुझे मालूम हो सदियों से
तेरे हिज्र में मै कैसे कैसे दर्द से दुखों से गुज़रा हूँ
मैं तुझ तक आ रहा हूँ क़तरा क़तरा पिघल कर जानाँ
समन्दर बेकराँ है तू समो ले मुझको तू ख़ुद में

वैक्यूम

मेरी सोच के हर इक पल में
जागते सोते साथ मेरे ही तुम रहती हो
इक भी लम्हा बिल्कुल तन्हा
तेरे बिन नहीं जीता हूँ मैं
फिर भी इक ख़ालीपन मेरे
अन्दर पलता रहता है
जब तक तुझको देख न लूँ मैं
अजब सी भूख लगी रहती है
तुझको गले लगा लूँ तो
ये दिल का गड्ढा भर जाता है
प्यार नहीं तो फिर ये क्या है
इसे मुहब्बत क्यों नहीं कहते

ख़ामोश मुहब्बत

तुम्हें बिन बताए
बिना कुछ भी बोले
तुमसे मुहब्बत मैं करता रहूँगा
मेरी मुहब्बत मुहब्बत है जानाँ
मेरी मुहब्बत तिजारत नहीं है
कि बदले में तू भी मुझे यूँ ही चाहे

सोशल डिस्टैंसिंग

मैं सोऊँगा
तो तुम सपनों में आओगी, पक्का है
सपनों में लेकिन देखो तुम
सोशल डिस्टैंसिंग का तो
बिल्कुल ध्यान नहीं रखती हो
इसीलिए तो मैंने अब
रातों को सोना छोड़ दिया है

बेबसी

तदबीर न तरक़ीब ही अब काम आती है कोई
सहल होती ही नहीं हैं ज़िन्दगी की मुश्किलें
मेरी हर कोशिश फ़क़त नाकाम ही होती है क्यों
सुलझ क्यों पाती नहीं हैं ज़िन्दगी की उलझनें
किस तरफ़ से किस जगह से किस सिरे से
पकड़ कर सुलझाऊँ मैं ये ज़िन्दगी
खींचता हूँ जब सिरा कोई तो
फिर से कस के बँधने लगती है गिरह
समझ में कुछ भी नहीं आता मैं आख़िर क्या करूँ
तदबीर न तरक़ीब ही अब काम आती है कोई
ऐसा बेबस और यूँ लाचार मैं पहले कभी न था

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी से
लाख शिकवे थे मुझे
जब तलक
जाना नहीं था
तुझ से चल कर
तुझ तलक ही पहुँचना है ज़िन्दगी

ख़ामोशी

मैं लफ़्ज़ों का एक ज़ख़ीरा लेकर तुम तक पहुँचा था
तब तक मगर तुम्हारे अन्दर
दूर दूर तक फैल चुका था
इक जँगल ख़ामोशी का
मैं दुनिया की भीड़-भाड़ में बस उस दिन से
अपने आप में ही ग़ुम होकर
बन बैठा हूँ एक जज़ीरा तन्हाई का
तुम्हें कभी फ़ुरसत हो आना
दोनों मिलकर बात करेंगे
मुमकिन है ऐसे ही सिमटे
यह जँगल ख़ामोशी का
मुमकिन है इक रोज़ दोबारा
तन्हाई के इस ग़मगीन जज़ीरे में
पहले जैसी भीड़-भाड़ हो

मैसेज

ऐसा क्यों होता है बोलो

कि जब कुछ भी पोस्ट करूँ मैं

बार बार फिर चैक करता हूँ

तेरे नाम के आगे

वो हल्के नीले से रँग के

दो टिक लगे कि नहीं लगे हैं

बेचैनी सी रहती है

सो न गई होओ तुम

सो जाती पर पोस्ट मेरी तो पढ़ लेती ना

कुछ पल बाद ही दोबारा

मैं चेक करता हूँ

अभी भी नहीं देखा तुमने

क्या है यार?

दिल की धड़कन बढ़ जाती है

इन्तज़ार रहता है तेरा

मैं पढ़ता हूँ फिर से खोलकर

अपने ही भेजे मैसेज को

तभी अचानक हल्के नीले रँग के

वो दोनों टिक दिख जाते हैं

आह! तो तुमने देख लिया है

कितनी ख़ुशी, कितनी ही राहत

कितना सुकूँ मिलता है रूह को

तुमको अँदाज़ा ही नहीं है

इसी तरह मेरे जीवन में

सदा उपस्थित रहा करो तुम

तुम

आठ बिलियन से ज़्यादा लोग हैं इस ख़ल्क़ में
और मैं तुम पर फ़क़त तुम पर अटक कर रह गया हूँ
तेरे आगे और कुछ दिखता नहीं है क्यों मुझे
तेरी सोचों के क़फ़स में क़ैद होकर रह गया हूँ
कभी तुमने भी सोचा है कि ऐसा क्यों है जानाँ
तुम्हें देखा तो दिल को यूँ लगा था तुम वही हो
जिसकी मेरी रूह को थी कितने जन्मों से तलाश
मिल गई हो तुम तो फिर मैं और को देखूँ तो क्यों
थम गये हैं तुम पे आकर जुस्तजू के भी क़दम
आठ बिलियन से ज़्यादा लोग हैं इस ख़ल्क़ में
और मैं तुम पर फ़क़त तुम पर अटक कर रह गया हूँ

नाराज़गी

जुदा होते हैं अक्सर लोग
आपस में ख़फ़ा होकर
कभी न मिलने की क़समें भी
खाते हैं मगर जानाँ
गए हो जिस तरह से तुम
कभी जाता है यूँ कोई

बेहतरीन अमल

कहीं पढ़ा था
कि ज़िन्दगी में
सभी एहसाससात में से
सबसे अच्छा एहसास
इस बात का इल्म होना है
कि दुनिया में कहीं कोई
तुम्हारी वजह से ख़ुश है
ये शायद ठीक ही होगा
मगर इससे भी बेहतर है
कभी एहसास होने पर
कि दुनिया में कहीं कोई
तुम्हारी वजह से ख़ुश नहीं है
दर्द में है, दुखी है
उसका दुख दर्द
मिटाने की कोशिश करना
यही दुनिया का बेहतरीन अमल है

तगारग

एक तगारग आने को है दिल के पागलख़ाने में
और सुना है आज बड़े ज़ोरों की बारिश होनी है
ज़ब्त के बाँध बना रक्खे हैं जो दिल के दरिया पर मैंने
इस बारिश में टूट रहेंगे
देख निशान-ए-ख़तरा के ऊपर से
दर्द समन्दर बह निकला है
दिल की दीवारें टूटेंगी आँखों के साहिल टूटेंगे
एक तलातुम दिल का सारा दर्द बहाकर ले जाएगा
अपनी मुहब्बत की दुनिया में घोर तबाही मच जाएगी
तुम आओगी और तबाही के एवज़ में
मुआवज़े का ऐलान करोगी
बहुत देर कर दी है तुमने पहले भी
तुम्हें तबाही के इम्कान से
बहुत वक़्त रहते आगाह हो जाना चाहिए था
अब भी देर हो गई तुमसे
इतनी बड़ी तबाही के मलबे से
शायद ज़िन्दा न निकलूँ मैं

ये मुआवज़ा जो तुम देने वाली हो

मेरे बाद बताओ किस को दोगी तुम

बेहतर नहीं कि इसी वक़्त आकर हालात का जायज़ा लो

छोटी मोटी किसी मुरम्मत में देखो

कुछ ज़्यादा ख़र्च नहीं होता है

दरिया के साहिल टूटे तो बहुत बड़ा नुक्साँ भी होगा

इल्तिजा

तुझसे मिलने की तुझे बस देख लेने की
जो इक उम्मीद रहती थी जगी दिल में
वो लगता है कि अब आहिस्ता-आहिस्ता
बुझ रही है मेरे सीने में कहीं
न कोई राबिता है अब न कोई रास्ता ही है
कि मैं ख़ुद ही कभी तुझसे कहीं मिलने ही आ जाऊँ
यूँ तेरे ज़िक्र से या फ़िक्र से तू याद तो आती ही रहती है
कहाँ है तू, क्या करती है, किन लोगों में रहती है
कभी तो ख़बर कोई भेज तू अपनी
तुझे गर मिल सकूँ, तुझे देख लूँ, कुछ बात कर पाऊँ
तो शायद इज़्तिराबी ज़ेहन को मेरे
सुकूँ मिल जाए थोड़ा सा

कहानी

कहानी हर दफ़ा यूँ ही शुरू होती है बस
एक मुल्क में इक राजा था इक रानी थी
दोनों इक दूजे से मुहब्बत करते थे
फिर उनकी फ़ुरक़त के क़िस्से होते हैं
राजा रानी होकर भी वो लाख दुखों से गुज़रे थे
उनकी तकलीफ़ों को पढ़कर सुनकर हम रोने लगते हैं
वो तो थे, अब गुज़र गए हैं लेकिन अपने दुख का क्या
राजा रानी नहीं न सही लेकिन हम इन्साँ तो हैं
अगर मुहब्बत कर ही बैठे तो इतनी तकलीफ़ें क्यों
अपनी कहानी छोटी सी है दर्द मगर कितना ज़्यादा है
इसको पढ़ कर तुम भी रोओ
जैसे लिख कर मैं रोया हूँ

ख़बर

ख़बर है कि इस बरस नवम्बर में
आस्मां से कोई आफ़त बरसेगी
और ये दुनिया ख़त्म हो जाएगी
कहीं भी कुछ भी नहीं बचेगा
मुझको लेकिन कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता
ये दुनिया रहे या ख़त्म हो जाए
मेरे लिए तो बस ये दुनिया
उसी दिन ख़त्म हो गई थी
जिस दिन मुझे तू छोड़ गई थी
मेरा तो फिर कुछ भी कहीं नहीं बचा

कैमिस्ट्री

जिस तरह की इज़्तराबी फ़ितरत है तुम्हारी
जिस तरह तुम बेतहाशा घूमती फिरती हो ना
लगता है तुममें कहीं इक इलेक्ट्रोन ज़्यादा है
मैं सदियों से सुस्त-रौ बस फिर रहा हूँ दर-ब-दर
मुझमें जनम के वक़्त से ही इक इलेक्ट्रोन की कमी रही है
तुम अगर अपना ये इक इलेक्ट्रोन दे दो मुझे
तुम्हें भी चैन मिल जाए मुकम्मल मैं भी हो जाऊँ

रियाज़ी

हम पर लागू ही नहीं होते रियाज़ी के उसूल
दो से इक मनफ़ी कर दें तो पीछे कुछ नहीं बचता है
एक में एक जमा कर दें तो फिर भी एक ही रहता है
दोनों को तक़सीम करें तो सिफ़र ही हासिल आता है
ज़रब करें तो उसी एक में हम दोनों रह सकते हैं
सच तो ये है हम दोनों बस एक ही रूह के दो हिस्से हैं
हम पर लागू हो नहीं सकते रियाज़ी के उसूल

वस्ल

अपनी बाँहों के शिकंजे में कस के मुझे
अपने होंठों से बस तबाह कर दो
वस्ल की रात ये
आख़िरी रात भी हो
तो कुछ ग़म नहीं
मैं तेरी बाँहों में मारा भी गया
तो जाविदाँ हो जाऊँगा

जिस दिन तुमने अश्क बहाकर मेरा दिल तड़पाया था
उस दिन मैं भारी क़दमों से चलकर घर तक आया था
छीन ले गए आँसू तेरे मेरा सब सुख चैन सुकूँ
पास मेरे तेरी यादों का ही तो इक सरमाया था
मेरे दिल के पास नहीं था तुझसे ज़्यादा और कोई
तू क्यों रूठ गया है मुझसे तू रूह का हमसाया था
प्यार अगर सच्चा है मेरा तू मेरा हो जाएगा
क़िस्मत मिलवाएगी तुझसे क़िस्मत ने मिलवाया था
शर्मिन्दा है आज बहुत "साहिर" कि बस अन्जाने में
उसने बिन सोचे समझे ही तुझको दुख पहुँचाया था

ज़माने में मुहब्बत का अलमबरदार हो जाता
अगर क़िस्मत में ये होता तेरा सरदार हो जाता
नहीं मालूम था दफ़'अतन त'अल्लुक़ तोड़ लेगी तू
अगर आगाह कर देती तो मैं तैयार हो जाता
मुहब्बत में अगर तय था कि इक दिन जान जाएगी
तो मुझसे कह दिया होता ज़रा होशियार हो जाता
तेरे होने से कितनी सहल है ये ज़िन्दगी मेरी
तेरे बिन ये मेरा जीना बहुत दुश्वार हो जाता
मुहब्बत दी ख़ुदा ने फिर करम तेरा हुआ मुझपर
कहाँ जाता तेरी जानिब से गर इन्कार हो जाता
ये सब तमग़े वफ़ा के जो यूँ सर पे टाँक रखे हैं
नहीं मिलते अगर दूजे से मुझको प्यार हो जाता
ये तुझसे ही वफ़ा के हैं ये सब तेरी बदौलत हैं
अगर मुझको न तू मिलती मैं बदकिरदार हो जाता

धीरे धीरे पर्तें खोल

चल तू अपनी शर्तें खोल

ज़ेहन में अभी अन्धेरा है

हौले हौले पलकें खोल

सख़्त धूप में तपता हूँ मैं

अपनी ज़ुल्फ़ की रातें खोल

ये दुनिया चालाक बहुत है

तू भी अपनी आँखें खोल

कब से यूँ ख़ामोश है तू

बोल लबों से बातें खोल

अब किस बात पे ख़फ़ा है तू

हँस कर दिल की गिरहें खोल

मैं बस तेरा हूँ तेरा हूँ

अपनी सोच की बाँहें खोल

न कोई शिकवा है तुझसे न कोई फ़रियाद करूँगा
जैसे भी हो पाया मुझसे मैं ख़ुद को बरबाद करूँगा
इक तेरी चाहत में ख़ुद को ऐसा भूल गया हूँ जानाँ
नहीं जानता था मैं ख़ुद में यूँ तुझको आबाद करूँगा
मेरे ज़ेहन के हर गोशे में बस तेरा ही अक्स बसा है
अगर तुझे मैं भूल गया तो ख़ुद पर ही बेदाद करूँगा
मेरी साँसों के पिंजरे में तू इक प्यारा क़ैदी है
मैं तो बस मर ही जाऊँगा जब तुझको आज़ाद करूँगा
नहीं भूलता हूँ पल को भी तुझको याद करूँ तो कैसे
जिस दिन तुझको भूल गया न उस दिन तुझको याद करूँगा

इस जहाँ की दौलतें सब मेरे आगे कुछ नहीं
तू अगर मिल जाए मुझको तेरे आगे कुछ नहीं
ये हदें ये सरहदें ईमानो-मज़हब कुछ नहीं
मेरा मज़हब इश्क़ है और इसके आगे कुछ नहीं
तू है तो सब कुछ हूँ मैं वरना मैं कुछ भी नहीं
ये मुकम्मल शे'र है और इसके आगे कुछ नहीं
पीछे जो कुछ भी था मेरे वो तो पीछे रह गया
देखता हूँ जब मैं आगे मेरे आगे कुछ नहीं

मेरे अन्दर चल रही आहो-फ़ुग़ाँ को सुन ज़रा
धड़कनों में बोलते दर्दे-निहाँ को सुन ज़रा
तूने सुन रक्खे हैं क़िस्से आशिक़ों के दर्द के
भूल जाएगी सभी इस दास्ताँ को सुन ज़रा
दर्द मेरा बस गया हर ज़र्रा-ए-कायनात में
इस ज़मीं को सुन ज़रा तू आस्माँ को सुन ज़रा
तेरी भी आवाज़ में झलके है अब मेरा ही दर्द
कर यक़ीं या ग़ौर से अपने ब्याँ को सुन ज़रा
मेरी आँखें बहुत कुछ कहती हैं मेरे यार तू
ग़ौर से इक रोज़ आँखों की ज़बाँ को सुन ज़रा

जाने क्या जुर्म कर गया हूँ मैं

तेरे दिल से उतर गया हूँ मैं

तेरी फ़ुरक़त की तेज़ आँधी में

तिनका तिनका बिखर गया हूँ मैं

तेरे ग़म की उदास गलियों में

चलते चलते सिहर गया हूँ मैं

मेरे मरने के बाद लोगों से

पूछती हो किधर गया हूँ मैं

जब तेरा हिज्र न गुज़ार सका

ख़ुद ही चुपके गुज़र गया हूँ मैं

सुबह से बज़्मे-ग़म जमी थी बस

इक तेरी, तेरी ही कमी थी बस

नहीं बिल्कुल नहीं रोया था मैं

हाँ ज़रा आँख में नमी थी बस

साँस रुक रुक के आती जाती थी

नब्ज़ में ज़िन्दगी थमी थी बस

न था तेरा क़ुसूर न मेरा

एक रँजिश सी बाहमी थी बस

यूँ तो कब के बिछड़ गए होते

एक निस्बत सी लाज़मी थी बस

चल इक वादा कर लेते हैं

जीवन सादा कर लेते हैं

हम दोनों को एक ही दुख है

आधा आधा कर लेते हैं

बासी होते इस रिश्ते को

फिर से ताज़ा कर लेते हैं

दर्दों से लड़ने की कोशिश

और ज़्यादा कर लेते हैं

न टूटेंगे न बिखरेंगे

सख़्त इरादा कर लेते हैं

ख़ुश ही रहना चाहती हो तो सुनो
तुम मुझे बरबाद होते देख लो
हिज्र में अपने मेरी इस रूह को
जिस्म से आज़ाद होते देख लो
ख़ुद को इक पल की ख़ुशी के वास्ते
उम्र भर नाशाद होते देख लो
न मिलो मुझसे चलो यूँ ही सही
मुझपे ये बेदाद होते देख लो
एक दिन मैंने चले जाना ही है
ख़त्म ये रूदाद होते देख लो

हिज्र को जितना पालोगे वो उतना बढ़ने लगता है
फिर इक दिन ये दर्दे-हिज्राँ सर पर चढ़ने लगता है
कुछ भी दारू पट्टी करके इसका दरमाँ कर डालो
ज़ख़्मे-मुहब्बत रिसता रह जाए तो सड़ने लगता है
ग़ैरों की सोहबत में दिल को ज़्यादा देर न रहने दो
छोड़ के अपनों को ग़ैरों की पट्टी पढ़ने लगता है
दिल के जैसा हीला जू नहीं देखा होगा आपने भी
जब कहीं बात नहीं बनती तो हीले घड़ने लगता है
दिल की मर्ज़ी है जिस पर भी आना चाहे आ जाता है
अक्सर मिट्टी के कूज़े पर हीरे जड़ने लगता है

पैग़ामे-मुहब्बत भेजा था मैंने
तू उसकी वक़अत ही समझी नहीं
तुझको लगा मैं हूँ आवारा आशिक़
मेरी आशिक़ी को तू समझी नहीं
दीवाना हुआ हूँ मुहब्बत में तेरी
मेरी दीवानगी को तू समझी नहीं
हवस और मुहब्बत हैं दोनों जुदा
तू दोनों में ये फ़र्क़ समझी नहीं

अमूमन मैं किसी से यूँ कभी यारी नहीं करता
फिर अपनी जान दे देता हूँ ग़द्दारी नहीं करता
अगर तुम दोस्त हो मेरे तो हम दोनों बराबर हैं
मैं अपने दोस्तों के बीच सरदारी नहीं करता
ज़ेहन तो लाख समझाता है नासमझी न कर जाहिल
मगर ये दिल मुहब्बत में समझदारी नहीं करता
सही को ही सही कहना मेरी फ़ितरत में शामिल है
ग़लत बन्दे की मैं बिल्कुल तरफ़दारी नहीं करता
मेरे जो दिल में होता है वही मुँह पर भी कहता हूँ
मैं सच्ची बात करता हूँ रियाकारी नहीं करता

कब तक मुहब्बत में रोते रहेंगे

ज़ख़्मों को अश्कों से धोते रहेंगे

मुहब्बत में कुछ दर्द होते हैं जानम

मुहब्बत में ये दर्द होते रहेंगे

ये अश्क अपने बड़े क़ीमती हैं

कब तक ये मोती पिरोते रहेंगे

ये लोग तारीक ज़ेहनों के मालिक

सोए हुए हैं ये सोते रहेंगे

उन्हें नफ़रतों की फ़सल काटने दो

मुहब्बत के हम बीज बोते रहेंगे

जिसकी बातों में यूँ आकर तूने मुझको ठुकराना था
तेरी बातों में ही उसका लहजा जाना पहचाना था
उस दिन मेरे ज़ेहन में जाने कैसी वहशत तारी थी
या मैं उसको मार डालता या मैंने मर जाना था
बच्चों के सो जाने तक मैं रहा घूमता सड़कों पर
इससे पहले घर जाता तो बच्चों ने डर जाना था
इन्तज़ार में तेरे घँटों खड़ा रहा चौराहे पर
थक गईं मेरी आँखें तुझको किस जानिब से आना था
दो पल बैठ के तुझसे मीठी बातें ही तो करनी थीं
और भला तू सोच कि तुझको मैंने कौन सा खा जाना था
सच कहती हो तुम कि मुझको प्यार नहीं करना आता
तुम जो मिलती रहती मुझसे आते आते आ जाना था

है दुआ कि ज़िन्दगी ये शहनशाही हो तेरी
हर तरफ़ हर चार सू बस वाहवाही हो तेरी
दो जहाँ में तेरी शुहरत के हों क़िस्से दूर दूर
सबसे ऊँची सबसे ऊपर कजकुलाही हो तेरी
जब तलक जागूँ फ़क़त तेरे ख़्यालों में रहूँ
मेरे ख़्वाबों में हमेशा आवा-जाही हो तेरी
ऐ मेरी साक़ी पिला अपने लबों से मुझको तू
उम्र भर यूँ ही लबालब ये सुराही हो तेरी
जितने भी इल्ज़ाम हैं सब मेरे सर पे डाल दे
मेरे हिस्से की भी सारी बेगुनाही हो तेरी
मूरिदे-इल्ज़ाम हूँ मैं बस तेरे ही इश्क़ में
मेरे हक़ में बोलना जब भी गवाही हो तेरी
मेरी भी तक़दीर में होंगी ये सारी शुहरतें
गर कभी मुझ पर भी कुछ ख़ातिर निगाही हो तेरी

जुस्तजू, ख़्वाहिश, तमन्ना, मेरी हसरत, आरज़ू
एक तू, बस तू ही तू, हाँ तू ही तू, बस तू ही तू
तुझमें देखा है ख़ुदा को मेरी नज़रों में है तू
अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू
तेरी आँखें मेरी आँखों से मुख़ातिब हो गईं
चल रही दोनों में है इक ख़ूबसूरत गुफ़्तगू
कितनी बातें तुझसे करने को हैं मेरे ज़ेहन में
भूल जाता हूँ मगर आते ही तेरे रूबरू
मेरे ख़्वाबों में जो आकर रोज़ मिलती है मुझे
उससे मिलती है मेरी जाँ तेरी सूरत हूबहू
मैं कि इक आशिक़ अज़ीम और तू उरूजे-हुस्न है
तज़किरे दोनों के "साहिर" क्यों न हों फिर कू-ब-कू

मेरे इज़हारे-मुहब्बत पे भड़कती क्यों है
तू अगर मेरी नहीं मुझ में धड़कती क्यों है
गर नहीं मुझसे कोई निस्बत तुझे तो ये बता
याद तेरी मेरे सर में ही भटकती क्यों है
मुहब्बत करने वाला मैं क्या पहला शख़्स हूँ
ये मेरी बात ज़माने को खटकती क्यों है
तू मुहब्बत है मेरे दिल को ज़रा आराम दे
आग बन कर मेरे सीने में धधकती क्यों है
बरसती है कभी बारिश मेरे आँगन में गर
आके बिजली मेरी छत पे ही कड़कती क्यों है

चल मुहब्बत में जान ले लेना

तू मेरा इम्तिहान ले लेना

मैं भी गीता पे हाथ रक्खूँगा

तू भी सर पर क़ुर'आन ले लेना

मँज़िलों की फ़तह से लौटूँगा

मेरी सारी थकान ले लेना

फ़ासला जब कभी लगे बढ़ने

इश्क़ को दरमियान ले लेना

बेगुनाही न कर सको साबित

अपने हक़ में ब्यान ले लेना

अपने हर लफ़्ज़ पर खड़ा हूँ मैं

जब भी चाहे ज़ुबान ले लेना

मैं तुम्हें फिर आदाब भेजूँगा
कुछ हक़ीक़त के ख़्वाब भेजूँगा
दे रही है मुझे जो ये दुनिया
तुमको भी वो ख़िताब भेजूँगा
बात मेरी सुनी गई ही नहीं
फिर भी अपना जवाब भेजूँगा
तुम ख़फ़ा हो चलो ख़फ़ा ही रहो
प्यार का मैं गुलाब भेजूँगा
सुनते हैं तुमको नींद आती है
देखना, एक ख़्वाब भेजूँगा
दकियानूसी अँधेरे ज़ेहनों को
इल्म का आफ़ताब भेजूँगा
गिन रही हो जो तुम सितम मेरे
मैं भी सारा हिसाब भेजूँगा

मेरा होकर मुझसे बेईमानियाँ करता है दिल
क्या बताऊँ कैसी नाफ़रमानियाँ करता है दिल
लाख कहता हूँ इसे तू रोएगा मत प्यार कर
इक नहीं सुनता मेरी मनमानियाँ करता है दिल
बिन बताए तेरे दिल से दोस्ती करने लगा
है बहुत बदमाश ये शैतानियाँ करता है दिल
यूँ तो कहने को बहुत दाना है मेरा दिल मगर
इश्क़ में फिर भी बड़ी बचकानियाँ करता है दिल
प्यार भी करता है तुझसे और कहता भी नहीं
कैसी कैसी देख ले नादानियाँ करता है दिल
छोड़ कर सब ख़ूबरूओं को हुआ तुझ पर फ़िदा
देख तुझ पर किस क़दर क़ुर्बानियाँ करता है दिल

तुझसे मुहब्बत है कह न सकूँगा

एहसास लेकिन कराता रहूँगा

शबो-रोज़ करते हुए याद तुझको

तुझको भी मैं याद आता रहूँगा

लाज़िम नहीं है कि तुम भी निभाओ

मैंने तो की है निभाता रहूँगा

लिखता रहूँगा मुहब्बत के नग़्मे

नग़्मे मुहब्बत के गाता रहूँगा

मुझे देख कर तू ज़रा मुस्करा दे

मैं उम्र-भर मुस्कराता रहूँगा

तेरी मुहब्बत जो न पा सका मैं

मायूस दुनिया से जाता रहूँगा

अब तक रहा हूँ मुहब्बत में नाकाम
इक बार फिर से मैं कोशिश करूँ क्या
मुहब्बत है तुमसे तुम्हें तो पता है
ज़माने में इसकी नुमाइश करूँ क्या
मुझसा नहीं कोई आशिक़ जहाँ में
तुमसे भी अपनी सिफ़ारिश करूँ क्या
ज़रा इस तरफ़ भी हो नज़रे-इनायत
अब ये भी तुमसे गुज़ारिश करूँ क्या
तुम्ही में ख़ुदा है हाँ तुम ही ख़ुदा हो
किसी और की फिर परस्तिश करूँ क्या
मुहब्बत का दिल ही से रिश्ता है "साहिर"
इज़हार में ज़ेहनी वरजिश करूँ क्या

ख़ामोशी की मूरत बन कर रहती हो
आँखों से तुम कितना कुछ कह देती हो
मैं अपने बारे में सोच नहीं पाता
मेरा सारा वक़्त तुम्हीं ले लेती हो
सारा दिन मैं तुमको सोचता रहता हूँ
तुम सारा दिन मेरी सोच में रहती हो
मैं इक ठहरी झील सा बैठा रहता हूँ
लेकिन तुम कल कल नदिया सी बहती हो
तुमसे जो है उस रिश्ते का नाम नहीं
पर तुम मेरी कुछ न कुछ तो लगती हो

दिल में तेरी याद और कुछ बेकली रह जाएगी
गर कोई भी बात तुझसे अनकही रह जाएगी
सच है आएँगी बहारें इस बरस तेरे बग़ैर
उन बहारों में न कोई दिलकशी रह जाएगी
जब गिरा देंगे हम अपने बीच की दीवार को
फिर दिलों के बीच गहरी दोस्ती रह जाएगी
कौन था, कैसा था वो, क्यों इस क़दर लिखता रहा
दुनिया मेरे बाद बस ये सोचती रह जाएगी
मैं लगा लूँगा किसी दिन मौत को अपने गले
ज़िन्दगी तू देखना बस देखती रह जाएगी

की थीं उसके साथ जितनी सब वफ़ाएँ ले गया

वो गया तो साथ आँगन की हवाएँ ले गया

मेरे हर ग़म का मुदावा जिसकी इक मुस्कान थी

जब गया वो साथ अपने सब शिफ़ाएँ ले गया

मैंने उसको रोकने की लाख कोशिश की मगर

वो न माना मेरी सारी इल्तजाएँ ले गया

बात सीधी उससे जब भी करनी चाही दोस्तो

वो मेरी हर बात को बस दाँएं बाँएं ले गया

वो बड़ा अच्छा था दिल का उससे कुछ शिकवा नहीं

उसकी ख़ातिर जितनी माँगी थीं दुआएँ ले गया

उसकी कुछ मजबूरियाँ थीं यूँ न जाता छोड़कर

जाते जाते मेरे सर की सब बलाएँ ले गया

अपने दिल का चैन लुटा बैठा हूँ यार
गीत मुहब्बत का मैं गा बैठा हूँ यार
समझ नहीं आता समझाऊँ क्या इस को
मैं दिल को ऐसा उलझा बैठा हूँ यार
तेरे ख़्वाब नहीं आते हैं अब मुझको
मैं रातों की नींद गँवा बैठा हूँ यार
इक पल को भी मेरी आँख नहीं लगती
मैं आँखों से नींद गँवा बैठा हूँ यार
इस बेदारी का कोई ईलाज तो हो
जज़्बातों की नींद गँवा बैठा हूँ यार
दिल मेरा अब मेरी एक नहीं सुनता
मैं इसको कितना समझा बैठा हूँ यार
मुझको चारों तरफ़ अँधेरा दिखता है
उम्मीदों का दीया बुझा बैठा हूँ यार
पता नहीं था नहीं रहेगा ये मेरा
अपने दिल से धोखा खा बैठा हूँ यार
डूबेगी या किसी किनारे लग जाएगी
मैं ऐसी कश्ती में आ बैठा हूँ यार

अब इतनी ज़िद नहीं अच्छी चलो भी मुस्कुराओ ना
ज़रा सी बात को इतना बड़ा मुद्दा बनाओ ना
ये हर इक बात पे लड़ना ये हर नुक़्ते पे अड़ जाना
कहाँ की अक़्लमन्दी है मुझे इतना बताओ ना
कोई कब तक भला नाराज़ रह सकता है सोचो तो
कि तुम भी थूक दो ग़ुस्सा चलो अब मान जाओ ना
तुम्हारी ख़ामुशी ने जान ही ले ली है बस मेरी
मुझे डाँटो, लड़ो मुझसे, मगर ये दिन दिखाओ ना
तुम्हारी ख़्वाहिशों पे वक़्फ़ कर दी ज़िन्दगी मैंने
कभी तुम भी मेरी ख़ातिर सितारे तोड़ लाओ ना

प्यार तो मैंने किया था एकतरफ़ा ही सही
तुम न जाने किस तरह ग़ैरों के हत्थे चढ़ गए
फूल हूँ वो हिज्र में जो सूख कर काँटा हुआ
वो शजर हूँ रोते रोते जिसके पत्ते झड़ गए
ऐसी शिद्दत से किया है याद हर लम्हा तुझे
ज़ेहन पर भी तेरी यादों के चकत्ते पड़ गए
तुम तो एज़ाज़े-मुहब्बत ले के फ़ारिग़ हो गए
जितने भी इल्ज़ाम थे सब मेरे मत्थे मढ़ गए
इश्क़ के बाज़ार में आकर मैं नँगा हो गया
सारे ही शाइस्तगी के कपड़े लत्ते झड़ गए
तल्ख़ियों से भर गई मेरी ये सारी ज़िन्दगी
तेरी बातों में जो थे शहदों के छत्ते झड़ गए

ये जो इश्क़ है ये अजीब है

ये न हो तो दिल भी ग़रीब है

तेरे दूर होने से देख ले

मेरी मौत मेरे क़रीब है

तेरा हिज्र ढोना ही है मुझे

मेरे काँधे पर ये सलीब है

इक तू ही है मेरा हमनशीं

इक तू ही मेरा हबीब है

मैं मरीज़ हूँ तेरे हिज्र का

तेरा वस्ल मेरा तबीब है

तेरा इश्क़ है मेरी ज़िन्दगी

तेरा हिज्र मेरा नसीब है

तेरे होने से ही है मेरा वजूद
मेरा कहीं कुछ तेरे बिन नहीं है
जब तू मेरे साथ होती नहीं है
कोई शब नहीं है कोई दिन नहीं है
तेरे बिन जिसे कहते हैं ना सुकून
मेरी ज़िन्दगी में वो लेकिन नहीं है
जिस पल तुझे याद करता नहीं मैं
ऐसा कोई पल कोई छिन नहीं है
तुझसे मुहब्बत है सब जानते हैं
ये बात ज़ाहिर है बातिन नहीं है
मुझे ये न कहना तुझे भूल जाऊँ
अभी मेरी मरने की सिन नहीं है
तुझसे मुहब्बत के इस मरहले से
सफ़र वापसी का तो मुमकिन नहीं है

तू मेरे जिस्म को न देख कि कैसा हूँ मैं
चेहरे से मेरी डेप्थ को मत नाप तू
मैं किसी खान्चे में फ़िट हो ही नहीं सकता
दूसरों की तरह मुझको ज़ेहन में न छाप तू
मेरी बातों में निहाँ हैं ज़िन्दगी के राज़ सब
मेरी बातें सुन ज़रा बैठ कर चुपचाप तू
मैं नहीं हूँ जिस्म कोई मैं सरापा ज़ेहन हूँ
समझ जाएगी मुझे पढ़के अपने आप तू

दे के वापस ले लिया क्यों चाहिए था जो मुझे
माँग बैठा था मैं ज़्यादा क्या तेरी औक़ात से
और भी तो लोग हैं तेरे जहाँ में ऐ ख़ुदा
खेलता है क्यों बता तू मेरे ही जज़्बात से
जो मेरा है वो तो मेरे पास होना चाहिए
और कुछ बिल्कुल नहीं चाहिए तेरी ख़ैरात से
दे के छीना है मेरा महबूब मुझसे ऐ ख़ुदा
तू बता क्या ख़ुश नहीं था मैं तेरी सौग़ात से
याँ नहीं तो वो मुझे अगले जहाँ मिल जाएगा
मुत्तफ़िक़ बिल्कुल नहीं हूँ मैं तेरी इस बात से
उसके बिन अर्शे-मुअल्ला भी नहीं चाहिए मुझे
मैं आ गया हूँ लौट कर वापिस पुले-सिरात से

छोड़कर मुझको किसी से प्यार न कर बैठना

ज़िन्दगी को ग़ैर की गुलज़ार न कर बैठना

मेरी आँखों में तुझे गर प्यार दिखता ही नहीं

तू किसी दूजे से आँखें चार न कर बैठना

दायरे बाँहों के तेरी हैं फ़क़त मेरे लिए

इनको औरों के गले का हार न कर बैठना

नीम बिस्मिल हूँ मैं पहले से ही मेरी जान सुन

मुझपे बेरहमी से दूजा वार न कर बैठना

मुझको अपनी हद में ही रखने की ज़िद में

तू कहीं अपनी हदों को पार न कर बैठना

बहुत ज़ालिम है ये दुनिया और तू ग़ाफ़िल भी है

ग़फ़लत से भी तू कहीं ऐतबार न कर बैठना

बात समझ में मेरी ये नहीं आती है
अच्छों के ही साथ बुरा क्यों होता है
वस्ल में भी जो दर्द एक हल्का सा है
फ़ुरक़त में वो दर्द सिवा क्यों होता है
दर्द वो जिसकी दवा नहीं होती कोई
दर्द वही फिर आप दवा क्यों होता है
जिसे मुहब्बत करता है दिल शिद्दत से
शख़्स वही इस क़दर ख़फ़ा क्यों होता है
ज़ख़्म मुहब्बत का गर भर भी जाए तो
रोज़ ही उसमें दर्द नया क्यों होता है

दिल ये मुझसे कह रहा है बस मुहब्बत छोड़ दे
जो नहीं करते हैं तुझसे उनकी सोहबत छोड़ दे
कैसे समझाऊँ इसे ये इतना भी आसां नहीं
जो मुहब्बत में जिए कैसे ये आदत छोड़ दे
इश्क़ भी जिसने किया हो इक इबादत की तरह
तुम ही बतलाओ भला वो क्यों इबादत छोड़ दे
फ़ायदा कुछ फ़ी सदी तो छोड़ भी सकता हूँ मैं
ये न कहना दोस्त है तो सारी लागत छोड़ दे
जानता हूँ तुझको उससे है शिकायत आज भी
ऐ मेरे दिल बस भी कर अब ये शिकायत छोड़ दे
है कहावत जाने वाले लौट कर आते नहीं
ये कहावत ही है आजा तू कहावत छोड़ दे
हो लिखी जबकि तसलसुल में मुहब्बत की क़ुरान
कैसे कोई इक पढ़े और एक आयत छोड़ दे
इश्क़ है मेरी इबादत इश्क़ है मज़हब मेरा
ये न कहना इश्क़ वालों की हिमायत छोड़ दे

ज़िन्दगी के सफ़र में अगर मिल गई हो
मुझे अपने ही साथ लेकर चलो तुम
मेरा हाथ थामो मुझे आसरा दो
गले से लगा कर मुझे चूम लो तुम
किसी भी ज़बाँ में पुकारो मुझे
होंठों से अपने मेरा नाम लो तुम
मेरी साँस बनकर मुझे ज़िन्दगी दो
लहू बन के मेरी रगों में बहो तुम
तुम्हारे बिना ज़िन्दगी है जहन्नुम
आके किसी रोज़ जन्नत करो तुम

मैं ज़मीं हूँ आस्माँ कर दे मुझे
या समन्दर बेकराँ कर दे मुझे
सोच में वुसअत मुझे कर दे अता
इक बुलन्दी पर मकाँ कर दे मुझे
मेरी आँखों को दिखा वो मोजज़ा
एक पल को बेज़ुबाँ कर दे मुझे
तू मुहब्बत का ख़ज़ाना है अगर
हीरे मोती सब जमा कर दे मुझे
तेरी सब बातें समझ सकता हूँ मैं
ख़ामुशी का तर्जुमा कर दे मुझे

तुम सुकूँ हो जाने जाँ राहत हो तुम
मेरे दिल की आरज़ू चाहत हो तुम
रफ़्ता रफ़्ता देख लो पड़ ही गई
अब तो मेरी रोज़ की आदत हो तुम
रच गई हो इस क़दर मुझमें कि बस
अब तो जैसे मेरी ही फ़ितरत हो तुम
चाहता हूँ मैं तुम्हें ऐसे कि बस
इस जहाँ की आख़िरी औरत हो तुम

मैं कि तालिब ही न था ईनाम का
नाम किसने ले लिया बदनाम का
रात भर सोने नहीं देता मुझे
इश्क़ तेरा है मेरे किस काम का
बेरहमी से तोड़ डाला है उसे
तुझसे जो रिश्ता रहा बस नाम का
जीते जी ही मर गया जब इश्क़ में
डर नहीं मुझको किसी अन्जाम का
तूने तो इक लफ़्ज़ भी बोला नहीं
मुन्तज़िर था मैं तेरे पैग़ाम का
ख़ाली लौटा हूँ तेरे दर से मगर
मुस्तहक़ था मैं तेरे इकराम का

जबसे तू यूँ बिछड़ गया है

दिल का गुलशन उजड़ गया है

दिल का रिश्ता सख़्त नहीं था

तागा तागा उधड़ गया है

पहली सी अब बात नहीं है

कुछ तो तुझको अखर गया है

देकर मुझको दर्द इश्क़ में

तेरा चेहरा निखर गया है

जबसे मुझसे जुदा हुआ तू

दिल ये नाज़ुक सिहर गया है

तिनका तिनका जोड़ा था जो

तिनका तिनका बिखर गया है

मेरे साथ रहा करता था

वो पागलपन किधर गया है

वो जो वक़्त गुज़र जाना था

मेरे अन्दर ठहर गया है

तेरे मेरे बीच जो ये दीवार खड़ी है
इसमें इक दरवाज़ा होना चाहिए था
नाराज़ भी हो सकता हूँ तेरी बातों से
तुझको ये अन्दाज़ा होना चाहिए था
तेरी हर ग़लती को मैंने माफ़ किया
लेकिन कुछ ख़ामियाज़ा होना चाहिए था
अश्कों से क्यों तर हैं ये रुख़सार तेरे
रुख़सारों पर ग़ाज़ा होना चाहिए था
बहुत देर में मरहम लेकर आई हो
इन ज़ख्मों को ताज़ा होना चाहिए था

कल जो था कितना हसीं था आज वो मौसम नहीं
और भी होंगे हसीं तुझसा मगर औसम नहीं
न वो पल है, न वो दिन है, न महीना, न वो साल
वक़्त है तहरीक में रहता कहीं भी थम नहीं
तू बदल जाएगा इक दिन ये तेरी फ़ितरत न थी
तू जो बदला है मुझे इसका मगर कोई ग़म नहीं
इस जहाँ में जो भी कुछ है आरज़ी है दोस्ता
कुछ भी तो दायम नहीं है कुछ भी तो क़ायम नहीं

मुझसे कहती हो कि तुम्हें भुला दूँ मैं
याद मगर तुम फिर भी आती रहती हो
तुमको भी कुछ ऐसा करना चाहिए न
याद करूँ तो यादों में न आओ तुम
मैंने तो दिल को समझा कर देख लिया
मेरी तो ये कोई बात नहीं सुनता
तुम कह दो तो शायद थोड़ा असर करे
आओ इसको प्यार से कुछ समझाओ तुम
मैं भी इस हालत में बहुत परेशाँ हूँ
रात रात भर नींद नहीं आती मुझको
मेरी नींदें गर वापस नहीं कर सकती
आकर अपनी यादें ही ले जाओ तुम

तुझसे मिलकर मैंने दिल का और ख़सारा करना है

सोच लिया है मैंने तुझसे इश्क़ दोबारा करना है

यूँ ही इक दिन आकर अपनी शक्ल दिखा दे मुझको यार

मेरी इन तरसी नज़रों ने एक नज़ारा करना है

तू गर आई भी तो तूने दर्द ही देकर जाना है

मुझसे पूछ कि जिसने तेरा दर्द गवारा करना है

मैं कुछ बोलूँगा तो फिर मेरी ही शामत आएगी

तूने बस गालों में अपनी एक ग़ुब्बारा भरना है

बस भी कर कि इससे ज़्यादा सब्र नहीं होगा मुझसे

तूने क्या बुझते शोले को गर्म शरारा करना है

मेरी हिम्मत देख कि जिसने जान ही अपनी दे देनी है

तेरा क्या है तूने तो बस एक इशारा करना है

इर्तिक़ा की आख़िरी मँज़िल पे हूँ
कर ज़रा सा ख़ुद से ही बेहतर मुझे
जँगलों सहराओं में हूँ गामज़न
रास आता ही नहीं बिस्तर मुझे
पथरीली पगडँडियाँ रस्ता मेरा
लग न जाए देखना ठोकर मुझे
इस जहाँ में अब नहीं लम्बा क़याम
मिल भी ले तू ही कभी आकर मुझे
ख़ुद से लड़ने जा रहा हूँ जँग मैं
आ के पहना दे जिरहबख़्तर मुझे

तुम नहीं जानोगी दुख मुहब्बत के
तुमने तो जानाँ मुहब्बत की नहीं
तुमसे मिलने के तरीक़े सौ सही
तुमसे मिलने का मगर अब जी नहीं
सह गया हूँ मैं ख़ुशी से तेरा ग़म
मेरे लब पे देख कोई सी नहीं
तेरी आँखें देख कर मख़मूर हूँ
मैंने उस दिन से कभी मै पी नहीं
उस ख़ुशी की जुस्तजू में हूँ महव
जो ख़ुशी तूने मुझे दी ही नहीं

ये न पूछ कैसा हाल है

हर पल तेरा ही ख़्याल है

तेरे बिन भी जी रहा हूँ

ये कमाल भी तो कमाल है

मिलता हूँ बस ख़्यालों में

तेरा हिज्र ही तो विसाल है

मेरा दिल बड़ा ही अमीर है

तेरे ग़म से मालामाल है

तुझे याद करता हूँ क्या

भला ये भी कोई सवाल है

मेरी ज़िन्दगी में तू नहीं

बस इक यही तो मलाल है

कर इस तरफ़ भी इक निगाह

मेरी ज़िन्दगी का सवाल है

या तो ऐ मौला तू मर्गे-नागहानी दे मुझे
ज़िन्दा रखना है तो कोई आग पानी दे मुझे
पहले तू दे दे उसे भी एक हुस्ने-लाज़वाल
फिर मुहब्बत के लिए तू जाविदानी दे मुझे
उसके हिस्से में तू लिख दे एक लम्बी दास्ताँ
और मुहब्बत की कोई छोटी कहानी दे मुझे
सुनते आए हैं तू देता है सभी को बरकतें
अपने होने की तू फिर कुछ तो निशानी दे मुझे
इस तरह मर मर के जीना भी है कोई ज़िन्दगी
जी सकूँ मैं चैन से वो ज़िन्दगानी दे मुझे
मैं वो राजा हूँ यहाँ जिसकी रियासत छिन गई
कर करम तू उसके दिल की राजधानी दे मुझे

मुझसे तुझको आज भी नफ़रत तो है

मेरी नज़रों में तेरी इज़्ज़त तो है

तुझसे मिलने की गुज़ारिश दरगुज़र

बेरुख़ी मुझसे तेरी आदत तो है

मेरे हाथों में लकीरें न सही

तेरे हाथों में मेरी क़िस्मत तो है

चाहना तुझको मेरी फ़ितरत सही

चाहे जाना तेरी भी हसरत तो है

तेरी नज़रों में मैं ज़र्रा भी नहीं

दर्द मेरा हाँ मगर परबत तो है

काश कभी वो भी दिन हो

तुझसे मिलना मुमकिन हो

जिस दिन मिलने का वादा हो

दिन भर धिनक धिनक धिन हो

उस पल दिल को चैन नहीं

जो भी पल तेरे बिन हो

गुज़रे तेरी ही यादों में

जो भी पल हो जो छिन हो

जिस दिन याद न आए तू

दुनिया ये मेरे बिन हो

रास आने लगा सफ़र मुझको
मिल गया दर्द हमसफ़र मुझको
ज़िन्दगी मैंने कब बसर की है
ज़िन्दगी ने किया बसर मुझको
महव हूँ मैं तेरे ख़्यालों में
मैं कहाँ हूँ नहीं ख़बर मुझको
तेरी नज़रे-करम है मुझ पर
लग न जाए कहीं नज़र मुझको

अच्छे वक्तों में जो मेरे बहुत ही अच्छे यार रहे
आया वक़्त बुरा तो मैंने उनके भी कुछ वार सहे
फिर इलाजे-दर्दे-दिल मुझे शायरी में मिल गया
जितने ज़ख़्म दिए थे तूने उतने ही अश्आर कहे
इश्क़ नहीं था जब तक तब तक अपनी मर्ज़ी चलती थी
अब ये हाल है वो करते हैं जो कुछ भी सरकार कहे
जिन आँखों में हर पल बस तेरी ही सूरत रहती थी
उन आँखों से आज मुसलसल अश्कों की इक धार बहे

तक़दीर जब मझधार में ठेले मुझे

है कोई जो बाहों में ले ले मुझे

मेरे पीछे पड़ गई है ज़िन्दगी

मौत तू आगोश में ले ले मुझे

मैं अगर हूँ जँग तो जीते मुझे

हूँ अगर मैं खेल तो खेले मुझे

हूँ सुकूँ तो ज़िन्दगी पाए मुझे

दर्द हूँ तो ज़िन्दगी झेले मुझे

वो है तो मन्ज़ूर है अज़लत मुझे

वो नहीं तो ज़हर हैं मेले मुझे

जाते जाते दे गई थी जो मुझे
मुझपे तेरा आख़िरी एहसाँ है दर्द
मुझको अपनी जान से प्यारा हुआ
जब से मेरे दिल में इक महमाँ है दर्द
दर्द की शिद्दत से मिट जाता है दर्द
यानि वफ़ूरे-दर्द का दरमाँ है दर्द
सारी दुनिया दर्द की है सल्तनत
दर्द इक सुल्ताँ है बस सुल्ताँ है दर्द

इस दिल में कितनी है यासे-मुहब्बत

करने लगी है ख़ुलासे मुहब्बत

मुझको हमेशा ग़मों की घड़ी में

देती रही है दिलासे मुहब्बत

बेहद ग़रीबी में दिन कट रहे हैं

गुम हो गई है असासे-मुहब्बत

वो भी मुहब्बत मुहब्बत करे हैं

जिनको नहीं कुछ भी पासे-मुहब्बत

मुहब्बत हमेशा मुहब्बत रहेगी

करती नहीं है तमाशे मुहब्बत

मर भी गया तो भी अगले जनम में

जारी रहेगी तलाशे-मुहब्बत

मिल गईं तुझको सभी रँगीनियाँ
मेरे हिस्से आ गईं ग़मगीनियाँ
ज़ेहन को तुझसे नहीं शिकवा मगर
दिल अभी करता है नुक़्ताचीनियाँ
तल्ख़ियाँ हैं आज लहजे में तेरे
खो गईं जाने कहाँ शीरीनियाँ
ले ही डूबेंगी मुझे बस एक दिन
देख लेना ये मेरी ख़ुदबीनियाँ

ऐसा नहीं कि ये ग़म अपने ही हिस्से में आना था
इतना लेकिन तय था हमको इक क़िस्से में आना था
हम वो दो रूहें हैं जो मानूस रही हैं जन्मों से
इस धरती पर मिलना ही था जब जुस्से में आना था
मैंने बस यूँ ही तुझसे मिलने की ख़्वाहिश कर ली थी
मिलने ही न आती मुझसे गर ग़ुस्से में आना था

ऐसा नहीं वो ज़हन पर मेरे कभी तारी नहीं रहा
एक भी लम्हा नहीं है मुझपे जो भारी नहीं रहा
वो मुझे पढ़ता था सुनता था तो कहता था ग़ज़ल मैं
अब कहूँ क्या मेरा वो सामा मेरा क़ारी नहीं रहा

ग़ुस्सा होती हो तो फिर तुम चुप सी क्यों हो जाती हो
तुम्हें बतलाऊँ अच्छे से झगड़ना भी नहीं आता
बिछुड़ कर भी मुझे तुम याद तो आती ही रहती हो
तुम्हें तो ठीक से जानाँ बिछुड़ना भी नहीं आता

मैं तेरे इश्क़ में होकर बहुत बरबाद आऊँगा
तेरी महफ़िल से गर मैं लौटकर नाशाद आऊँगा
अभी मग़रूर है तू चल मैं कुछ दिन बाद आऊँगा
तेरे होंठों पे बन के एक दिन फ़रियाद आऊँगा
तू मुझको भूल जाने का ये नाटक आज तो कर ले
मैं जिस दिन याद आया न बहुत ही याद आऊँगा

ये जो आ बैठा है लब पे बन के इक फ़रियाद सा

भूला भूला लग रहा है है मगर कुछ याद सा

प्यार कहते हैं इसे सब लोग लेकिन दरअसल

ज़िन्दगी में यूँ ही आ जाता है जैसे हादसा

तुम्हें तो छीन कर खुशियाँ सुकूँ मिल जाएगा लेकिन
पुराना दर्द से मेरा भी इक गहरा सा नाता है
परेशाँ तुम भी तो होगे बहुत इस रोज़मर्रा से
मुझे भी एक मुद्दत से ये दर्दे-सर सताता है
तुम्हारी बेनियाज़ी पर यक़ीं आता नहीं जानाँ
वो अल्ताफ़ो-करम तेरा मुझे जब याद आता है

वो बातें जो मुझे तुझसे फ़क़त तुझसे ही करनी थीं
वो बातें मैं किसी दूजे से तो कर ही नहीं सकता
समझ में ही नहीं आता तुझे कैसे ये बतलाऊँ
हुआ है जो तेरा नुक्साँ उसे भर ही नहीं सकता
तेरा कुछ फ़ायदा होता हो तो मैं क्यों न मर जाऊँ
मैं ऐसा सोचता तो हूँ मगर मर ही नहीं सकता

पहाड़ी रास्तों जैसी है पगडँडी मुहब्बत की
अगर इक बार फिसलोगे सँभलना बहुत मुश्किल है
मेरी सोचों के मरक़ज़ में कुछ ऐसे आ बसी है तू
मेरे अन्दर से अब तेरा निकलना बहुत मुश्किल है
बहुत मुश्किल था मेरे वास्ते तो तुझसे मिलना भी
तुझे मिल कर मगर जाना बिछुड़ना बहुत मुश्किल है

जितना होता है ना वो घर से उजड़ जाने का दुख
पेड़ को होता है जो जड़ से उखड़ जाने का दुख
मेरी हालत उससे भी बदतर है तुझसे क्या कहूँ
सहन होता ही नहीं तुझसे बिछुड़ जाने का दुख

हिज्र में तेरे भी है लज़्ज़त बड़ी इक अजब सी
तेरी यादों में ही बस तल्लीन हो जाता हूँ मैं
अब नहीं तुझसे करूँगा मैं गुज़ारिश वस्ल की
मिलके तुझसे और भी ग़मगीन हो जाता हूँ मैं

तुम मुझसे न मिलो न मुझसे बात करो
ऐसा भी क्या जुर्म हो गया है मुझसे
मैंने तो बस रूह से तुझको चाहा है
क्या ये भी अधर्म हो गया है मुझसे

तूने कभी भी मुझसे कुछ भी नहीं कहा
नाराज़ है तो मुझसे कोई गिला तो कर
कि तेरी बेरुख़ी से हूँ मैं बहुत ही परेशाँ
गर तू ख़फ़ा नहीं है तो फिर मिला तो कर

मुझसे ख़फ़ा है वो मुझे बस इतना ही मालूम है
बस ये नहीं मालूम कि कैसे सम्भालूँ मैं उसे
उसके ख़फ़ा होने की गर वजह मुझे मालूम हो
सच कह रहा हूँ जान भी देकर मना लूँ मैं उसे

इस तरह तो जान ही ले लेगी फ़ुरक़त

कब तलक ज़िन्दा रहूँगा तेरे बिन

इश्क़ में फ़ुरक़त वबा से कम नहीं

लोग मरते जा रहे हैं दिन ब दिन

तेरे हिज्र के ग़म से दिल का भर जाना ही अच्छा है
तूने गर मिलना ही नहीं तो घर जाना ही अच्छा है
तेरी याद में पल पल तिल तिल घुल घुल जीना पड़ता है
ऐसे जीने से तो "साहिर" मर जाना ही अच्छा है

लोग लफ़्ज़ों से काट खाते हैं
तेरी ख़ामोशी डस गई मुझको
तेरी यादों का इक शिकँजा है
तू शिकँजे में कस गई मुझको
रेज़ा रेज़ा बिखर रहा था मैं
तू मुहब्बत से लस गई मुझको

अपने होंठों से हटा लो ये तबस्सुम मस्नूई
कि इसको देखकर ये दिल ज़रा भी ख़ुश नहीं होता
मेरे दिल को लुभाने की ये इक नाकाम कोशिश है
तेरे दुख जानता है जो वो हरगिज़ ख़ुश नहीं होता
मेरी मर्ज़ी है तेरे दुख सभी मैं ख़ुद पे ही ले लूँ
तेरी ये ज़िद है रहने दो कि मुझको कुछ नहीं होता

कभी महसूस होता है मैं तेरे पास बैठा हूँ
कभी एहसास होता है कि मुझसे कुछ कहा तुमने
कभी लगता है दिल में ज़ोर से इक दर्द उठ्ठा है
समझ में कुछ नहीं आता ये जादू क्या किया तुमने

ये बेताबी ये बेचैनी कभी रोना कभी हँसना
ये तेरी दी हुई चीज़ें हैं सब तेरी निशानी है
मेरी जागी हुई रातें ये अपने आप से बातें
जो तुमने बख़्श दीं मुझको तुम्हारी मेहरबानी है

मेरे इक इक शे'र के इक इक लफ़्ज़ पे ऐसा झड़पेगा
ख़ुद को मेरा बतलाएगा फिर हर इक शे'र को हड़पेगा
आज नहीं है उसको मेरी क़द्र कोई लेकिन इक दिन
मेरी याद में रोएगा वो सोच सोच कर तड़पेगा

ये मेरी आह को फ़रियाद करके रख देगा
ये मेरी ज़िन्दगी नाशाद करके रख देगा
मुझे मालूम है अन्जाम इस दीवानगी का
मुझे ये इश्क़ बस बरबाद कर के रख देगा

इक आख़िरी ही साँस पर अटकी हुई हो ज़िन्दगी जैसे
भला ऐसे में किस उम्मीद पर हर रोज़ ही जिया जाए
तेरे मिलने का कुछ इम्कां नज़र आता नहीं मुझको
तो फिर ये क्या ज़रूरी है कि तुझको याद भी किया जाए

क़ैद होकर रह गया हूँ उनकी यादों में कहीं
उनकी यादों से ज़रा कहना रिहाई दें मुझे
एक पल को भी कभी होने न दूँ ख़ुद से जुदा
अब कहीं गर वो किसी दिन यूँ दिखाई दें मुझे
जो हँसी के बुलबुले कानों में बजते थे मेरे
उनसे कहना अब कभी फिर से सुनाई दें मुझे

इस जहाँ का आख़िरी ही मर्द हूँ गर मैं
और तुम मुझको ही चाहो क्या ज़रूरी है
इस जहाँ की आख़िरी औरत अगर हो तुम
और मैं तुमको सराहूँ क्या ज़रूरी है

मेरी कोई बात सुनी और न कुछ पूछा ही मुझसे
यकतरफ़ा कार्रवाई का ये है नतीजा साफ़ है
तर्के-त'अल्लुक़ करके भी बैठी हुई हो मुत्मइन
तुम समझती हो कि शायद तुमको सब कुछ माफ़ है
फ़ैसला भी तुम करो फिर अपने ही हक़ में करो
ये कहाँ की मुन्सिफ़ी है कौनसा इन्साफ़ है

आकर देख तू जो तेरे बिन मेरे दिल की हालत है
मेरे एहसासात मेरी तकलीफ़ अयाँ नहीं कर सकते
लिख कर भेजूँ हाल तुम्हें अपना लेकिन मैं लिखूँ क्या
मेरे दर्द की शिद्दत को ये लफ़्ज़ ब्याँ नहीं कर सकते

तुझे लगता है यूँ चुप रह के तूने जँग जीती है
मेरे दिल से तेरे ऊपर जो है दावा नहीं जाता
अगर तू राबिता रखती तो शायद बच ही जाता मैं
तू सोचेगी मगर यूँ दिल से पछतावा नहीं जाता

ऐसा भी क्या माँग लिया मैंने तुझसे
कि तू मुझसे बात ही करना छोड़ गई
पहले भी तो वो ही था मैं जो अब हूँ
अब क्यों मुझसे मिलना जुलना छोड़ गई

कभी सोचा है क्या गुज़रेगी तब दिल पर तुम्हारे
गर कभी चाहे तुम्हें कोई हमारी ही तरह
और फिर जब तुम भी उसको चाहने लग जाओ तो
भूल जाए वो तुम्हें बिल्कुल तुम्हारी ही तरह

कोशिश लाख कर ले तू भुला पाएगी न मुझको
मेरी यादों का मेरे बाद क्या अचार डालेगी
ग़मे-फ़ुरक़त की शिद्दत से अगर बच भी गया मैं तो
ये तेरी बेरुख़ी मुझको यक़ीनन मार डालेगी

मैं भी तेरी ही तरह मासूम हूँ यार
तूने ठीकरा मेरे सर क्यों फोड़ा है
कैसी सज़ा सुना दी मुझको यार मेरे
मुझको मारा न ज़िन्दा ही छोड़ा है

मेरे जैसी भी हालत हो जाती है

क़िस्मत को तो मात नहीं कर सकता मैं

तेरे दो दो नम्बर मेरे फ़ोन में हैं

फिर भी तुझसे बात नहीं कर सकता मैं

ठीक हूँ मैं फ़िक्र मेरा तुम ज़रा भी मत करो
उसकी बातें छेड़ ज़ख्मों को हरा भी मत करो
मुझको मेरे हाल पर ही छोड़ दो तुम ख़ुश रहो
इस तरह अपने मज़े को किरकिरा भी मत करो
सच है उसकी आँख का तारा हुआ करता था मैं
अब मगर उस शख़्स का तुम तज़किरा भी मत करो

इक सुकूने-दिल की ख़ातिर बहुत भटका दर-ब-दर
थक गया हूँ मैं बहुत अब घर ही जाना चाहता हूँ
इस जहाँ में कुछ नहीं है इक सिवा दर्दो-अलम
और मैं दर्दो-अलम से भर ही जाना चाहता हूँ
हो गया मालूम मुझको ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा
अब गले लग कर तेरे मैं मर ही जाना चाहता हूँ

हाँ वो अच्छे हैं तो अच्छे ही होंगे
मेरा लेकिन हाल बुरा कर रक्खा है
इक दो हफ़्तों की होती तो सह लेते
मेरा सारा साल बुरा कर रक्खा है
गीत मुहब्बत का मैं गाता पर उसने
मेरा तो सुर ताल बुरा कर रक्खा है

कोई शय भाती नहीं मैं क्या करूँ

बेकली जाती नहीं मैं क्या करूँ

ज़िन्दगी से मैं बहुत मायूस हूँ

मौत भी आती नहीं मैं क्या करूँ

रात भी कटती नहीं जागे हुए

नींद भी आती नहीं मैं क्या करूँ

यूँ समझ लो बस ग़नीमत है कि मैं रोया नहीं हूँ
वैसे सारी रात जागा हूँ ज़रा सोया नहीं हूँ
मेरे होने या न होने में नहीं है फ़र्क़ कोई
मैं जहाँ में इस तरह से हूँ कि बस गोया नहीं हूँ

नज़र फेर लो तुम झुका लो ये पलकें
ख़्यालों से मुझको निकालोगी कैसे
न ढूँढोगी गर तुम जवाबों में मुझको
सवालों से मुझको निकालोगी कैसे

कुछ रहा न याद तेरे इश्क़ में

हो गया बरबाद तेरे इश्क़ में

तुझसे पहले ग़र्क़ था ख़ुद में ही मैं

और तेरे बाद तेरे इश्क़ में

बिन तेरे ऐ ज़िन्दगी बिल्कुल अधूरा हो गया हूँ
टूट कर बिखरा हुआ हूँ चूरा-चूरा हो गया हूँ
देखते हैं यार मेरी लाश को हैरत के साथ
और कहते हैं कि अब लगता है पूरा हो गया हूँ

तुझे अचरज तो होगा जानकर पर जान ले इतना
तुझे ही सोचता रहता हूँ मैं हर रोज़ ख़लवत में
मुझे फ़ुरसत नहीं मिलती कभी तेरे ख़्यालों से
मेरे दोनों जहाँ मिलते हैं मुझको तेरी सूरत में

सोचती रहती हो सिर्फ़ मुझको ही

मुझसे तुम बात क्यों नहीं करती

तुम को भी तो वहीं पे जाना है

तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलती

तुम जानो तुमको और से जो रस्मो-राह हो
जो हो सके तो इस तरफ़ भी इक निगाह हो
इस कहकशाँ से मुझको मतलब नहीं कुछ भी
तुम ही मेरे जहान की ख़ुर्शीदो-माह हो

ज़िन्दगी तेरी से ही क्यों न दफ़ा हो जाऊँ मैं
तू जो है मुझसे ख़फ़ा तुझसे ख़फ़ा हो जाऊँ मैं
अब तेरी फ़ुरक़त नहीं मुझको गवारा देख तू
यूँ न हो कि एक दिन बस बेवफ़ा हो जाऊँ मैं

ये तेरी याद, और ये दर्दो-ग़म जुदाई के
मेरी छोड़ो कि मुझे इन सब की आदत हो गई
जान जाओगी किसी दिन तुम जुदाई के ये दुख
जब किसी से तुमको भी जानाँ मुहब्बत हो गई

तू भी तड़पे याद में बस रात दिन मेरी तरह
अपने जैसा ही तुझे ख़ब्ती ज़ेहन दे जाऊँगा
तुझको जिससे भी मुहब्बत हो तुझे वो न मिले
जाते जाते मैं तुझे ऐसा ल'अन दे जाऊँगा

कैसे कैसे ख़्वाब रँगीं बुन रहा हूँ
हमसफ़र तुझको ही अपना चुन रहा हूँ
मुझसे कहती बोलती कुछ भी नहीं तू
ख़ामोशी की आहटों को सुन रहा हूँ

अब किसी दिलदार का प्यारा नहीं हूँ मैं
अब किसी की आँख का तारा नहीं हूँ मैं
चल पड़ूँगा उठ के मँज़िल की तरफ़
हाँ गिरा तो हूँ मगर हारा नहीं हूँ मैं

क़ुदरत की ये कैसी शैतानियाँ हैं
या मेरी क़िस्मत की मनमानियाँ हैं
मेरी ज़िन्दगानी का आलम न पूछो
परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं

तेरे बिन जीना मुझे कुछ ऐसा बेमक़सद लगा
तूने छोड़ा मुझको मैंने ज़िन्दगी ही छोड़ दी
अब नहीं करता किसी से ज़िक्र तेरे इश्क़ का
तेरी रुसवाई के डर से ये ख़ुशी भी छोड़ दी

जो बात ज़ुबाँ तक आ न सकी
वो दबी रही दिल में ही कहीं
आँखों का ब्याँ तो समझी नहीं
तू दिल की सदा ही सुन लेती

महफ़िल में भी बैठ के गर मेरी ही बातें करनी हैं
मेरे साथ ही बैठो न हम अपनी बातें भी कर लें
तन्हाई में बैठे बैठे गर मुझको ही सोचना है
मेरे साथ ही बैठो न हम अपने बारे में सोचें

कितना नुक्साँ हो गया तेरे हिज्र में तेरी याद में
इसके बारे में भी सोचा जाएगा पर बाद में
इश्क़ में मेरा तो जो होना था वो तो हो गया
पूछना था तुझको क्या मिलता है इस बेदाद में

मुहब्बत नहीं है तो कुछ भी नहीं है

मुहब्बत ही बुनियाद है इस जहाँ की

मुहब्बत ही चाहत है सब की जहाँ में

मुहब्बत ही फ़रियाद है इस जहाँ की

उम्र सारी ही कटी थी जिसकी बस रोते हुए
हो सका तेरा न जो बस तेरा ही होते हुए
हिज्र में तेरे जिसे देखा है सबने ग़मज़दा
वो यहाँ का ही नहीं था याँ का ही होते हुए
ज़िन्दा होकर भी कभी जो असल में ज़िन्दा न था
मर गया कमबख़्त वो कल रात में सोते हुए

तुम्हें देखकर यूँ लगता है जैसे मेरा बचपन हो
तुम भी बालिग़ हो जाना उम्र मेरी जब पचपन हो
तुम कमसिन हो फिर भी मुझको अपनी हमसिन लगती हो
हो सकता है अपना ये पिछले जन्मों का बन्धन हो
इन लोगों की बातें सुनकर मेरा भी दम घुटता है
तुम्हें देखकर जी उठता हूँ तुम मेरी ऑक्सीजन हो

त'अल्लुक़ कट गया अपना यानि बुरा हुआ
आप भी इस बात का अफ़सोस कीजिए
ग़लती तो इसमें आपकी भी कुछ ज़रूर थी
अब आप चाहे मुझको सारा दोष दीजिए
कुछ नहीं बिगड़ा अभी आ जाइए मिल जाइए
इतनी भी ज़िद अच्छी नहीं कुछ होश कीजिए

पिछली सर्दी में जो मैंने पशमीने के ख़्वाब बुने थे
आज भी उन ख़्वाबों में तेरी गर्माहट पाता हूँ मैं
तेरी याद का इक इक रेशा लिपटा हुआ है ज़ेहन में यूँ
हर इक सोच की आमद में तेरी आहट पाता हूँ मैं

ग़लत भी समझा गया बेइज़्ज़ती भी की गई
और मेरे साथ काफ़ी ज़्यादती भी की गई
मैं मुहब्बत में था मैंने कुछ बुरा माना नहीं
कुछ महीने एकतरफ़ा आशिक़ी भी की गई
रोज़ मैं होता रहा ज़िन्दा नई उम्मीद पर
रोज़ उसके हिज्र में फिर ख़ुदकुशी भी की गई

ये तग़ाफ़ुल, बेरुख़ी, ये हिज्र, और फिर ग़मे-हिज्राँ
मुझे तू मार डालेगी या फिर मैं ख़ुद ही मर जाऊँ
मुहब्बत क्या हुई तुझसे मुसीबत मोल ले ली है
चल अब तू छोड़ ये क़िस्सा कि मैं भी अपने घर जाऊँ

जो मुझको सज़ा दे के ख़ता पूछ रहा है
वो सबसे हुआ क्या था बता पूछ रहा है
अब चाहता है वो कि माफ़ी माँग ले मुझसे
हर इक से मेरे घर का पता पूछ रहा है

तुम जैसे भी चाहो मुझको वैसे ही बर्बाद करो
जितने भी तरीक़े आते हैं उनसे मुझ पर बेदाद करो
फिर भी तुमको लगे अगर ये सारे सितम नाकाफ़ी हैं
मुझ पर ढाने को जानाँ कुछ और सितम ईजाद करो

जब से तूने आना जाना छोड़ दिया है
इन आँखों ने ख़्वाब उगाना छोड़ दिया है
आँखें तेरी मेरे ग़म से नम न हों
मैंने भी अब अश्क बहाना छोड़ दिया है

तुम्हारी बेरुख़ी कितना मेरा नुक्सान करती है
कि बिन तेरे ज़माने में मुझे कुछ भी नहीं जँचता
नज़र अन्दाज़ कर देती हो जब मेरी गुज़ारिश को
तुम्हारा कुछ नहीं जाता मेरा कुछ भी नहीं बचता

ऐ ख़ुदा तू सारी जन्नत पास रख
एक बस वो नूर दिलवा दे मुझे
हूरो-गिलमां की नहीं ख़्वाहिश मुझे
बस मेरी महबूब मिलवा दे मुझे

नींद सी ने'अमत ख़ुदा ने दी मुझे
आँखों में शुक्राने रख कर सोता हूँ
ताकि तेरे ख़्वाब दिखाई दें मुझको
तेरी याद सिरहाने रख कर सोता हूँ

मर न जाए मुझमें तेरी याद कहीं
मैं अपने ज़ख्मों को ज़िन्दा रखता हूँ
भर न जाएँ तेरी याद के ज़ख़्म कहीं
इन ज़ख्मों पर अश्क छिड़कता रहता हूँ

मैं जहाँ देखूँ जिसे देखूँ मुझे तुम ही नज़र आओ
एक इक चेहरे में तुम हो एक इक हुलिए में तुम
किस तरह तुम को निकालूँ अपने अन्दर से कहो
हर रगो-रेशा में तुम हो मेरे हर ख़लिए में तुम

तुम्हारे हिज्र का ग़म और ये ज़ुल्मत की रात
तुम्हारी याद के दीपक जलाकर रख लिए मैंने
मज़ा जीने का कुछ कम हो रहा था जब मुहब्बत में
तुम्हारे ही दिए ज़ख़्मों के मुँह फिर चख लिए मैंने

याद आता हूँ तो मुझको आ के मिल

देखती ही रह न ख़्वाबों में मुझे

मैं सवालों में तेरे था ही नहीं

कैसे पाएगी जवाबों में मुझे

मैं इसी दुनिया में रहता हूँ यहीं

ढूँढती है क्यों किताबों में मुझे

हर दम ख़्यालों में बस तेरा चेहरा

मेरे तसव्वुर की हद ही यही है

या फिर तुझे सोचने के अलावा

कोई और मौज़ू बचा ही नहीं है

मैं जो तुझसे दूर ही था अब भी तुझसे दूर हूँ
क्या तेरे नज़दीक है वो जो तेरे नज़दीक था
मैं तो अपनी बात जैसी भी थी कह के चल दिया
अब तू बैठी सोचती रह मैं ग़लत या ठीक था

वो कहते हैं मेरी उम्र हो गई है

मुझको मुहब्बत का हक़ ही नहीं है

मुहब्बत की भी उम्र होती है क्या

हक़ भी मुहब्बत का होता है क्या

इश्क़ जब मैंने किया दुनिया ने मुजरिम जानकर
क्या बताऊँ दोस्तो कितनी सज़ाएँ दीं मुझे
मुस्करा कर सह गया जब हर सज़ा चुपचाप मैं
इश्क़ ने ख़ुश हो के कितनी ही दुआएँ दीं मुझे

मेरे अन्दर जँग छिड़ी रहती है यार

मैं बस अपने आप से लड़ता रहता हूँ

लोग समझते हैं मैं शायद पागल हूँ

ख़ुद से ही क्यों बातें करता रहता हूँ

ख़ताएँ वो भी होती हैं कि मु'आफ़ी हो नहीं सकती
सज़ा कितनी भी दे दो फिर भी काफ़ी हो नहीं सकती
तुम्हारी बेरुख़ी ने इस क़दर नुक्साँ किया मेरा
लगाओ लाख सीने से तलाफ़ी हो नहीं सकती

तेरे होंठों पर मुझे बस मुस्कराहट चाहिए
और हँसो तो उस हँसी में खिलखिलाहट चाहिए
बस उजाले ही उजाले हों अँधेरे दूर हों
ज़िन्दगानी में तेरी वो जगमगाहट चाहिए

यूँ मुझसे दूर रहकर भी तू मुझसे दूर तो हो ही नहीं पाई
तेरी मौजूदगी महसूस करता हूँ मैं अपने पास हर लम्हा
यूँ ही नाराज़ रहने से मिला है क्या हमें तू सोच के बतला
नतीजा कि रही तू भी तो बस तन्हा रहा मैं भी तो बस तन्हा

पूछता फिरता हूँ दिल से हो गया है क्या तुझे
चैन क्यों पड़ता नहीं है अब किसी भी जा तुझे
हँस के कहता है मेरा दिल छोड़ गहरी बात है
लाख कोशिश करके भी सकता नहीं समझा तुझे

ये तो सच है कि कोई हीरो नहीं हूँ मैं
इश्क़ में नाकाम हू ज़ीरो नहीं हूँ मैं
जल रहा हो रोम और बँसी बजाऊँ
लापरवा तो हूँ मगर नीरो नहीं हूँ मैं

मुझको भी अपने ख़्वाबों में बुन लो यार
मुझको ही तुम अपना साथी चुन लो यार
लोगों की सब बातें सुनती आई हो
मेरी भी इक बात ज़रा सी सुन लो यार

नादानी में मैंने उस पर कितना प्यार उंडेला था
पानी में सदियों रहकर भी पत्थर नर्म नहीं होता
मुझ पर कोई कवर चढ़ा है या मेरी फ़ितरत है ये
कितना भी ग़ुस्सा हो मेरा लहजा गर्म नहीं होता

मेरी दुआ भी है ये मैं चाहता यही हूँ
तेरी तलाश मुझसे बेहतर पे जा के ठहरे
पर मुझसे बेहतर कोई है ही नहीं जहाँ में
ये जुस्तजू तुम्हें ही दे दे न ज़ख़्म गहरे

तुझसे निस्बत है कोई पिछले जनम की दोस्ता
इक यही एहसास मुझको है सताता हर लम्हा
क्यों नहीं तुझको भुला पाता मैं इक पल के लिए
क्या वजह है तू मुझे है याद आता हर लम्हा

इश्क़ है तुझसे मेरी जाँ क्या करूँ

पास मेरे तू कभी आती नहीं

इश्क़ इक अरबी ज़बाँ का लफ़्ज़ है

और अरबी ही तुझे आती नहीं

बेवजह तेरी नाराज़ी

चैन नहीं दिल को इक लम्हा

बिछुड़ गए पर क्या पाया है

तू भी तन्हा मैं भी तन्हा

हुनर क्या है तुम्हारे पास कि बस इक निगाह में ही
किसी को ग़मज़दा करना किसी को शाद कर देना
ये क्या कि गर किसी ने देख ही डाला मुहब्बत से
तो उस मासूम की बस ज़िन्दगी बरबाद कर देना
तुझे ज़ालिम नहीं कहता मगर गर रहम आ जाए
मुझे यादों से अपनी एक दिन आज़ाद कर देना

ऐसा तड़पता हूँ मैं बिन मुहब्बत
अल्लाह मेरे साथ कुछ ऐसा कर दे
या तो मेरी जान ले ले मुहब्बत
या ज़िन्दगी को मुहब्बत से भर दे

मैंने जिस शिद्दत से चाहा है उसे
उसको मेरी हो ही जाना चाहिए
रहती है जैसे ख़्यालों में मेरे
उसको ख़्वाबों में भी आना चाहिए

वो बड़ा ख़ामोश था चुपचाप था
आज अर्से बाद कुछ बोला है वो
सुन के उसकी बात मैं हैरान हूँ
अब हुआ मालूम इक शोला है वो
सीख लीं उसने भी सब चालाकियाँ
मैं समझता था बहुत भोला है वो

मेरे होने से भी सब कुछ ठीक है

इस जहाँ में कुछ ख़राबी न हुई

मैं तो सारा ही तुम्हारा हो गया

तू मगर मेरी ज़रा भी न हुई

मैं ज़ाहिर होने नहीं देता मैं अन्दर से कैसा हूँ
देख के लोग समझते हैं मैं पहले से निखर गया हूँ
मगर हक़ीक़त ये है जानाँ तेरी इस फ़ुरक़त के ग़म में
मैं अन्दर से टूट चुका हूँ बुरी तरह से बिखर गया है

ज़बान तेरी लफ़्ज़ तेरे और फिर लहजा तेरा

कैसे न पहचानता आवाज़ तेरी फ़ोन पर

तू जो कहना चाह रही थी सब समझ आया मुझे

हाँ अगर था शक ज़रा तो वो था तेरी टोन पर

उम्र भर जी लूँगा फ़ुरक़त में तेरी
हिज्र की आदत मुझे पड़ जाएगी
सब्र की मेरे नहीं है इन्तहा
ज़िन्दगी लगता है कम पड़ जाएगी

हिज्र में जीने की आदत हो गई
कैसे आता मैं तुम्हारे सामने
तुमसे मिल कर गर ख़ुशी होती मुझे
रो न पड़ता मैं तुम्हारे सामने

तेरी फ़ुरक़त में ऐसा मसरूफ़ हूँ मैं
देखो मेरे बिस्तर पर ये ताश पड़ी है
मैं बाहर से बेशक ज़िन्दा लगता हूँ
मेरे अन्दर देखो मेरी लाश पड़ी है

अपने ही अन्दर लिए यूँ इक कहानी अनकही
ज़िन्दा रहने से बड़ी कोई अज़्ज़िअत ही नहीं
जी रहा हूँ मैं मगर ज़िन्दा नहीं हूँ अब भी मैं
और इस हालत में जीने की तबीयत भी नहीं

कर लिया तर्के-त'अल्लुक़ ही अगर
फिर तू मुझसे रिश्ता क्यों नहीं तोड़ती
साथ मेरे जब नहीं चलना तुझे
फिर तू मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ती

यारों को हैरानी है मैं किस दुनिया से आया हूँ
इतने सदमे सहकर भी मैं ऐसे कैसे जीता हूँ
किस मिट्टी का बना हुआ हूँ न टूटा न बिखरा हूँ
आख़िर क्या खाता हूँ मैं किस घड़े का पानी पीता हूँ

न तो मैं ये चाहता हूँ सब करें मुझको सलाम
न मेरी ख़्वाहिश ही है हर रोज़ ख़बरों में रहूँ
मुझको इस दुनिया में शोहरत की हवस बिल्कुल नहीं
मैं तो बस ये चाहता हूँ तेरी नज़रों में रहूँ

भूख तेरे दीदार की लगती रहती है
हाल बुरा है बिन देखे इन आँखों का
तुझे देखकर मैं भी थोड़ा सो जाऊँ
पेट अगर भर जाए मेरी आँखों का

तुझे बिन छुए बिन देखे सुने भी
तुझसे मुहब्बत मैं करता रहूँगा
अपनी मुहब्बत पे गर सच कहूँ तो
हमेशा ही मैं नाज़ करता रहूँगा

मुझको तेरा हिज्र जब खाने लगा
मेरे चेहरे पर असर आने लगा
फूलगोभी सा खिला चेहरा मेरा
बन्दगोभी सा नज़र आने लगा

इक तुझी से इश्क़ करने के सिवा
पास मेरे ऑप्शन कोई नहीं
चार जानिब देख ले महफ़िल में तू
तुझसा गुलरू गुलबदन कोई नहीं
हूँ मैं हैरत में कि राहे-इश्क़ में
आजकल है गामज़न कोई नहीं

वो इक गहरे समन्दर सा बड़ा ख़ामोश बैठा है
उसे मत छेड़ना देखो वो इक तूफ़ाँ उठा देगा
तुम्हारे बिन उसे जीने की चाहत ही नहीं कोई
अगर वो ठान बैठा ना तो अपना सब गँवा देगा

मेरे ज़ेहनो-दिल के हर इक गोशे में
मेरी हर इक सोच में तेरा जलवा है
आज तलक मैं तुझसे क्यों नहीं कह पाया
मुझको अपने आप से ये ही शिकवा है

तुझे मुहब्बत करना मुझको मना है क्या
तूने मुझ पर कैसा बैन लगा रखा है
मुझको अपनी अक़्ल पे ऐन भरोसा है
इश्क़ के आगे भी तो ऐन लगा रखा है

मेरे मैसेज का जवाब आया नहीं
तेरा हुँगारा मेरा मक़सद नहीं है
मैं चिट्ठियों के दौर का बन्दा हूँ यार
मेरे सब्र की तो कोई हद नहीं है

सब्र की बस आख़िरी हद पर खड़ा हूँ आज मैं
पार कर जाने से पहले मुझ को वापिस खींच ले
ये न हो मैं और का हो जाऊँ और तू रो पड़े
आ मुझे तू दौड़ कर बाहों में अपनी भींच ले

रियाज़ी के उसूलों से जुदा हैं ये मुहब्बत के उसूल
दो में से गर एक निकालो पीछे फिर इक बच जाता है
मगर मुहब्बत में तो ऐसा बिल्कुल ही नहीं होता है
दो में से गर एक निकालो पीछे कुछ नहीं बचता है

सोच रहा था आज कि तुझसे मिलकर ही
अपनी सारी ख़ुशियाँ तुझसे बाँटूँगा मैं
ये भी सोचा था कि तुझसे कहने को
अच्छे अच्छे लफ़्ज़ों को ही छाँटूँगा मैं
दिन भर इतना बिज़ी रहा कि भूल गया
देखना ख़ुद को आज बहुत डाँटूँगा मैं

तू शायद ये सोचे इसमें मेरी कुछ ख़ुदग़र्ज़ी है
या ये समझे मेरी मुहब्बत भी नक़ली है फ़र्ज़ी है
फिर भी बस इक बार मुझे साबित करने का मौक़ा दे
दिल के दफ़्तर में तेरे मेरी इतनी सी अर्ज़ी है
मेरे दिल में सिवा तुम्हारे और नहीं रहता कोई
मुझको बस इतना कहना था आगे तेरी मर्ज़ी है

और भी होंगे जो तुम को चाहते होंगे मगर
अपने सब अतराफ़ तुम नज़रें घुमा कर देख लो
इनकी चाहत बस तुम्हारे जिस्म तक महदूद है
तुम अगर चाहो इन्हें अपना बना कर देख लो
एक मुझको ही मुहब्बत है तुम्हारी रूह से
गर यक़ीं न हो तो मुझको आज़मा कर देख लो

लोगों ने जो कहा उसे ही बस तुमने सच मान लिया
मुझको ये मालूम नहीं था कानों की कच्ची हो तुम
तुम दुनिया के हेर फेर की बातें नहीं समझती हो
इस बारे में सच बोलूँ तो अभी बहुत बच्ची हो तुम
वो जो इक ख़ूबी है तुममें उसने ही दिल जीत लिया
इन झूठे लोगों में रहकर भी दिल की सच्ची हो तुम

आजा चल झगड़ा ही कर लें बेवजह
इसी बहाने बात तो तुमसे हो जाएगी

तू अगर क़िस्मत में मेरी है नहीं
मेरे अन्दर से निकलती क्यों नहीं

मिल तो जाएगी मुझे यूँ हर ख़ुशी तेरे बग़ैर
नामुकम्मल ही रहेगी ज़िन्दगी तेरे बग़ैर

नाक़ाबिलों की भीड़ में बीड़े गँवा लेते हैं हम
हाँ कोयलों के इश्क़ में हीरे गँवा लेते हैं हम

तेरी ख़ातिर दुनिया से लड़ जाऊँगा
पहले तेरे साथ लड़ाई ख़त्म तो हो

तेरी नज़रों में उठने के लिए
और कितना ज़लील होना है

कोई रिश्ता नहीं रहा लेकिन
एक तागा है टूटता ही नहीं

मैं क्यों बेचैन सा रहता हूँ
क्यों मुझे कल नहीं पड़ती

और सभी से मिलती हो पर ये नादानी करती हो
मुझसे मिलने में ही इतनी आनाकानी करती हो

गुम हो गया था तुझको मैं याद करते-करते
खोदी है तेरी याद तो बरामद हुआ हूँ मैं

चाँद सितारे सारे थककर सो जाते हैं
जब मैं जाग रहा होता हूँ तेरी आँखों में

देता नहीं है अब तो वो मेरे ख़त का भी जवाब
उसको ख़ुदा क्या कह दिया वो तो ख़ुदा ही हो गया

जान भी देकर मैं ले लेता जिसे
मुफ़्त में ही ले गया कोई उसे

तुझसे मुहब्बत तो होगी नहीं
मुझे मेरी नींदें ही वापस लौटा दे

तुम्हारा जब भी दिल हो बेझिझक बेख़ौफ़ आ जाना
कि घर का ही नहीं दिल का भी दरवाज़ा खुला रखता हूँ मैं

तुझसे मिलने के तरीक़े सौ सही
तुझसे मिलने का मगर अब जी नहीं

मेरे सब अल्फ़ाज़ इकट्ठे करके अपने ज़ेहन में रखती जाना तुम
मैं जिस दिन मर गया न मेरे इक इक लफ़्ज़ को तरसोगी

मर जाएँ एहसास ही जब इन्साँ में तो
पीछे बोलो ज़िन्दा क्या रह जाता है

मैं समझता हूँ कि बस इक तू ही सब कुछ है मेरा
सोचती है तू कि मैं लगता ही तेरा कौन हूँ

अच्छा है तू मुझसे मिला नहीं ऐ दोस्त
वैसे भी तुझको इक रोज़ बिछड़ना था

खींचे लिए जाती है मुझको तेरी जानिब ज़िन्दगी
बढ़ के आगे रोक लूँ मैं ख़ुद को क़ुव्वत ही नहीं

है अजब इक चीज़ ये दर्दे-दिल की मै का जाम
रोज़ पीता हूँ इसे ये ख़ाली होता ही नहीं

मुझसे बात करो तो अपने ज़हन को ठँडा रखना तुम
मेरे लफ़्ज़ों की होती है थोड़ी सी तासीर गरम

तेरी फ़ुरक़त में जितने भी मैंने हैं अश्आर लिखे
तेरी फ़ुरक़त को वो सारे शे'र सुनाने पड़ते हैं

ये तुम्हारी जीत मेरी हार का मुद्दा नहीं
बस तुम्हारे जब्र मेरे सब्र का है इम्तहाँ

लफ़्ज़ों की तरतीब ने मुझको अब तक ज़िन्दा रखा है
मैं गर शायर न होता तो पागल ही हो जाता मैं

दिन भर कैसे रह लेती हो तुम इतनी ख़ामोशो-ख़फ़ा
रातों को ख़्वाबों में आकर कितनी बातें करती हो

अपने अपने रास्ते चलते हुए मँज़िल पे गर पहुँचेंगे हम
फिर हमसफ़र ही क्यों न हो जाएँ कि थोड़ा रास्ता कट जाएगा

तुझे पता भी है कि मैंने कितनी रातें
तेरे हिज्र में जाग जाग कर काटी हैं

इक रिश्ता मेरी दुनिया में ख़ुशियाँ लेकर आया था
उस रिश्ते का लेकिन मैं अब मातम करता रहता हूँ

मैं वो कोहे-ग़म हूँ रोता भी नहीं
हो गया है मुझमें ही ग़म मुँजमिद

हम दोनों में कोई ऐसी बात नहीं
फिर भी हम दोनों की बातें होती हैं

कितनी भरी हुई हो मेरे अन्दर तुम
रोज़ छलक जाती हो मेरी आँखों से

बिछड़ना ही है गर हमको तो हँस कर क्यों न बिछड़ें हम
कहीं गर मिल गए फिर से तो शर्मिन्दा तो न होंगे

दर्द होता दवा ही कर लेते
दुख की लेकिन दवा नहीं होती

तुझे भूल जाऊँ कैसे चल तू ही ये बता दे
तुझसा नहीं है कोई दुनिया में दूसरा

टूट कर चाहा था उसको
टूट कर ही रह गया हूँ

मैं सरापा इश्क़ हूँ देखो मुझे
मेरी रग रग में मुहब्बत है बसी

नहीं है दूसरा कोई मुहब्बत जिससे कर सकते
मुहब्बत ही न हम करते अगर तुमसे नहीं करते

तू ही मेरी जान है तुझको ख़बर है ना
लेकर ही छोड़ूँगा मैं बस आज अपनी जान को

तुमसे तो कुछ नहीं था दिल को मु'आमला
तुम यूँ ही मिल गए थे मुझे इत्तेफ़ाक़ से

इक मेरा दिल ही है जो बस मेरा है
फिर भी मेरी दिल से अनबन रहती है

कल मैं तेरी याद को आख़िर दरवाज़े तक छोड़ ही आया
आकर बस बैठा ही था कि दस्तक पर दस्तक दी उसने

मुहब्बत ज़दा मेरा दिल मुझसे पूछे
बता क्या मिला है मुहब्बत निभा के

तुम्हारा दर्द यूँ अश्कों में जब तब्दील होता है
तो सच मानो मुझको बड़ा ही फ़ील होता है

मैं किसी से उम्र भर हारा नहीं
इक मुहब्बत ने ही मारा है मुझे

तेरे हिज्र में मेरी जाँ सब लोग कह रहे हैं
रो रो के हो गया हूँ बर्गे-ख़ज़ाँरसीदा

मेरे खोए हुए वो सारे हाँ सारे ख़्वाब दे दे
मेरे रतजगों का मुझको मेरी जाँ हिसाब दे दे

कभी इक बार तो कहते कि हमको याद करते हो
अगर तुम झूठ भी कहते तो हम सच मान ही लेते

हमने बिछुड़ना तो मुस्कराते हुए था
ये क्या हुआ मुझे रोकर विदा किया तूने

भूलने के अमल में ये मरहला आता है क्या
दिल में तेरी फ़िक्र है न लब पे तेरा ज़िक्र है

मेरे हाथों में लकीरों की जगह गर हाथ हो तेरा
यक़ीनन ये मेरी बिगड़ी हुई तक़दीर बन जाए

याद करता हूँ उसे तो जान जाती है मेरी
उसको भुला देने के लेकिन मशवरे न दो मुझे

मुझको भुला देने की सारी कोशिशें कर देख लो
जब भुला दोगी मुझे मुझको बता देना ज़रूर

खा लिया मेरे ग़मों ने ही मुझे
मैं ग़मों की परवरिश करता रहा

मुझको छोड़ो मेरा क्या है मैं तो सह लूँगा ये दुख
तुम्हें तो ज़ख़्म देने दर्द देने में मज़ा आता है न

मेरी चाहत ने उसको दुनिया में सबसे हसीं कर डाला था
प्यार मेरा ठुकरा कर वो इक आम सी लड़की बन बैठी है

तेरी आँखों के चिराग़ों से है रौशन ये हयात
तेरी आँखों से ही हर शय में तजल्ली है यहाँ

मै उसकी ज़िन्दगी में इक लफ़्ज़ भी नहीं
है मेरी ज़िन्दगी की वो मुकम्मल दास्ताँ

इस दुनिया में सब होता है
एक बस तू ही न हुआ मेरा

मैंने अपना दर्द उँडेला हर इक लफ़्ज़ के पैकर में
तब कहीं जाकर नज़्म बनी जिसको पढ़कर तुम रोती हो

इक मुहब्बत ही तो आती है मुझे
फिर मुहब्बत के सिवा मैं क्या करूँ

मैं मुहब्बत ही मुहब्बत हूँ सरापा देख लो
इस जहाँ की नफ़रतो-रश्को-हसद से दूर हूँ

मेरे मर जाने पर सबसे पूछोगे कैसे मरा हुआ क्या था
मेरे होते हुए कभी तो पूछो मैं कैसा हूँ कैसे जीता हूँ

उस दिन तेरी आँखों में मैंने जो आँसू देखे थे
मेरी आँखों में वो आँसू देखो अब तक तैर रहे हैं

तुझे शायद ये लगता है मैं तेरा कुछ नहीं लगता
मगर तेरे सिवा दुनिया में कोई भी नहीं मेरा

मैंने अगर ये कह दिया कि सख़्त-जाँ हूँ मैं
तो क्या तुम अब मेरी जाँ ले के छोड़ोगे

तुझसे ऐसा बिछड़ा कि बस ख़ुद से बिछड़ गया था यार
आज तुझे देखा तो ख़ुद को याद बहुत आया हूँ मैं

बहुत मुश्किल है मुहब्बत में भी ऐसा हौसला रखना
तुम्हीं से इश्क़ करना और तुम्हीं से फ़ासला रखना

रच गई कुछ इस क़दर है तू मेरे ख़लियात में
लाख कोशिश पर भी तू मुझसे निकलती ही नहीं

महव हूँ मैं इस जुनूने-इश्क़ में कुछ इस क़दर
जुज़ तेरे दुनिया में अब आता नहीं कुछ भी नज़र

घेर कर मारा है मुझको ऐ दुखो
इक इक कर आते मैं तुमको देखता

एक अरसे में मिली मुझको ख़ुशी
और उसने मुझको पहचाना नहीं

इस क़दर नाज़ुक था अपने बीच अहदे-दोस्ती
अपने रिश्ते को फ़क़त इक ग़लतफ़हमी खा गई

मुझमें ऐसे रच गई है तू कि बस अब तू ही तू है हर कहीं
ऐसा लगता है कि तू ही तू है मुझमें मैं कहीं हूँ ही नहीं

अपने अन्दर ही कहीँ रख ले समेट कर
हर तरफ़ हर चार सू बिखरा पड़ा हूँ मैं

मेरे चेहरे से तुम मेरा दर्द नहीं पहचानोगे
दिल के अन्दर उतरोगे तो मेरे दर्द को जानोगे

टुकड़ों-टुकड़ों में नहीं लुत्फ़ो-करम मुझको क़ुबूल
वो मिले जब भी मुझे सारा का सारा चाहिए

वो अगर बिछड़ा भी है मुझसे तो उस कश्ती पे यार
जिसकी क़िस्मत में कभी था न कभी होगा किनारा देखना

आके मिल जा न किसी दिन यूँ ही बेवजह कि मैं
जी नहीं पाया तो शायद मर ही पाऊँ चैन से

मैं तेरी बेरुख़ी से बच भी गया तो क्या होगा
मुझे इक दिन यक़ीनन ये तग़ाफ़ुल मार डालेगा

मुहब्बत टपकती है लफ़्ज़ों से मेरे
मुझे बोलने की इजाज़त नहीं है

मुनाफ़िक़ लोग हैं जितने भी उनसे मैं कभी यारी नहीं करता
मुहब्बत दिल से करता हूँ मेरी जानाँ रियाकारी नहीं करता

जिस शख़्स को बिछड़े हुए मुझसे ज़माना हो गया
वो रियाज़ी के पहाड़ों की तरह ही मुँह ज़ुबानी याद है

मेरे ज़ेहन के हर सफ़्हे पर ऐसे छपी हुई है तू
कोई सफ़्हा खोलूँ तेरी शक्ल दिखाई देती है

मैं जो हूँ न मैं मुहब्बत के बिना मर जाऊँगा
जैसे तैसे भी हो बस मुझको मुहब्बत चाहिए

जैसे तू हर लम्हा मेरे ज़ेहन में छाई रहती है
इक दिन तेरा इश्क़ मुझे सौदाई करके छोड़ेगा

ज़िन्दगी मुझको अगर तू एक मौक़ा और दे
मैं तुझे अपना बना लूँगा हमेशा के लिए

जी रहा हूँ पर तेरे जाने के बाद
कुछ तो था जो मेरे अन्दर मर गया

हज़ारों कोशिशें कर लो मुझे तुम भूल जाने की
करोगी क्या अगर फिर भी तुम्हारा दिल न माने तो

ज़िक्र मेरा दोस्तों से जब कभी सुनती हो तुम
हो नहीं सकता कि मेरी याद भी आती न हो

फ़क़त तुझको रिझाने को मैं चेहरे की आराइश कर नहीं सकता
मुहब्बत बहुत करता हूँ मैं तुझसे पर नुमाइश कर नहीं सकता

तुम्हारे हिज्र में आँखों में उमड़ा है जो वो सावन नहीं जाता
तुम्हारे बिन जो मेरी ज़िन्दगी में है अधूरापन नहीं जाता

अपनी तमाम ख़्वाहिशों का मर्सिया पढ़के किसी दिन
आप ही मैं अपनी ये मय्यत उठा के चल दूँगा

मेरा दुख ये नहीं कि तेरे बिन ये दिल नहीं लगता
ये जो इक ज़र्ब सी पड़ती है दिल में जान ले लेगी

तुम्हें भी मुहब्बत से कुछ वास्ता है
मैं समझा था तुमको मुहब्बत नहीं है

नहीं कुछ भी मुझे दरकार था तेरे सिवा
मैं तुझसे कम पे राज़ी कैसे हो जाता भला

प्यार तुम्हारे रोएँ रोएँ को ख़ुशियों से भर देगा
दिल के दरवाज़े को खोलो प्यार को अन्दर आने दो

तुम्हें जब जानता नहीं था
मैं कभी तन्हा नहीं था

जब कभी तू याद आई है मुझे
रो दिया हूँ याद करके मैं तुझे

कब हुआ कि याद तू आई न हो
कब हुआ कि मैं नहीं रोया हूँ फिर

इससे पहले कि मुझे ग़लत भी समझा जाता
मैं ख़ुद में खो गया ख़ुद ही ख़ामोशी ओढ़कर

मूड मेरा जब ठीक नहीं होता है न
मैं ख़ुद से भी बात नहीं करता हूँ तब

दिल हुआ करता था जो हँसता हुआ मचला हुआ
वो पड़ा है देख लो रौंदा हुआ कुचला हुआ

मैं तग़ाफ़ुल का गिला तुझसे भला कैसे करूँ
मैं ही इज़हारे-मुहब्बत कर नहीं पाया कभी

मर तो सकता हूँ कभी भी मैं मुहब्बत में तेरी
चाहता था साथ तेरे जी लूँ थोड़ी ज़िन्दगी

याद आता हूँ तुझे तो इसमें मेरा क्या क़ुसूर
जाते जाते तू मेरा कुछ साथ अपने ले गई

मर तो जाऊँगा किसी दिन मैं मुहब्बत के बिना
पर मुहब्बत के बिना जीना बड़ा मुश्किल है यार

ये मेरे अल्फ़ाज़ तुम्हारी यादें लेकर आते हैं
काश यही अल्फ़ाज़ तुम्हें भी वापस लेकर आ सकते

भूल जाने में हैं तुझको अनगिनत दुश्वारियाँ
तेरी यादों के क़फ़स में मैं बहुत महफ़ूज़ हूँ

बात फ़क़त इतनी सी है कि
तुम मुझको अच्छी लगती हो

गर मैं तेरा कुछ नहीं लगता
तू मुझसे नाराज़ है क्यों

हो गई मुद्दत तेरी आवाज़ कानों तक नहीं पहुँची
दिल ये मेरा फिर भी तुझसे रोज़ ही बातें करता है

जब कोई रूठ के अपना प्यारा दूर कहीं जा बसता है
एक ख़ला सी रह जाती है जो कभी नहीं भर सकती है

ये तग़ाफ़ुल ये सितम जारी रहे जारी रहे
देख तो लूँ मैं तेरे जौरो-जबर की इन्तहा

कैफ़ियत दिल की मेरे कैसी भी हो
मैं मुहब्बत ही करूँगा उम्र भर

मैं परेशाँ हूँ कि मुझको चाहता कोई नहीं
तुम परेशाँ हो कि तुमको चाहता हूँ मैं

मेरी सब ख़्वाहिशों का मर ही जाना ठीक है शायद
मैं ख़्वाहिश उसकी करता हूँ मुझे जो मिल नहीं सकता

तुझको खोया है तो सब बेकार है मेरे लिए
अब जो भी खो सकता हूँ खोना चाहता हूँ मैं

तू जब बिछड़ा था मैं तुझको कह नहीं पाया था कुछ भी
गले में दर्द की गाँठ बनी और आवाज़ ही न निकली

तुम्हें मिलने की हसरत में हमारी जान जाती है
तुम्हारा कुछ नहीं जाता अगर तुम मिलने आ जाओ

बिन तुम्हारे वो जिया है यूँ कि जैसे मर गया हो वो
तुम्हें क्या फ़र्क़ पड़ता है जीए कोई या मर जाए

बिन तुम्हारे तड़पता है कैसे ये दिल देख लो
तुम कभी आओ न आकर रक़्से-बिस्मिल देख लो

क़दम क़दम पर हम दोनों को रंग-बिरंगे लोग मिलेंगे
मुझको तेरे जैसा तुझको मेरे जैसा नहीं मिलेगा

मुझसे ही नाराज़ हो क्यों बताओ
मैं तो बहुत प्यार करता हूँ तुमसे

इक यही बात ही खली है मुझे
तू बहुत देर से मिली है मुझे

याद हो जाऊँगा तुझको इस तरह
उम्र भर न भूल पाएगी मुझे

मुझे तुमसे मुहब्बत है
यही सच है हक़ीक़त है

मुहब्बत में अना का काम होता ही नहीं कुछ भी
मुहब्बत हर क़दम माशूक़ को आगे ही रखती है

जानता हूँ तेरी यादें मार डालेंगी मुझे
तेरी यादों से मुझे होना नहीं फिर भी जुदा

कुछ तो ले डूबा मुझे तेरा तग़ाफ़ुल दायमी
और कुछ मारा मुझे इस आलमे-सौदाद ने

मैं अगरचे दोस्तों में बहुत ही मक़बूल हूँ
तेरे आगे जाने-जानाँ कौन हूँ मैं क्या हूँ मैं

सारे जहाँ में शख़्स जो तुमको पसन्द था
उस शख़्स में ही नक़्स अब सारे जहाँ के हैं

वो भी हैं जिनको तेरा दीदार रोज़ ही होता है
इक मैं ही क्यों जानाँ तेरी एक झलक को तरस गया

आज उसकी आँख में देखा है क़तरा अश्क का
एक क़तरे ने मेरा ये दिल डुबोया है बहुत

कैसे हाथों से तराशा है मुझे ऐ ज़िन्दगी
मेरे ऊपर बस खरोंचें और ख़राशें रह गईं

लोग फ़क़त लोगों जैसे ही होते हैं
मुझ जैसा तो एक फ़क़त बस मैं ही हूँ

मैं तेरे हिज्र में ग़मगीं हूँ लेकिन रो नहीं सकता
करूँ मैं लाख कोशिश भी तुम्हारा हो नहीं सकता

तुमने सुननी ही नहीं है बात जब मेरी कोई
फिर बता मैं बेवजह लफ़्ज़ों को ज़ाए क्यों करूँ

मुहब्बत के जरासीमों ने मुझको खा ही जाना है
मैं मुहब्बत में किसी दिन मार डाला जाऊँगा

दूर नज़रों से जा रहा हू मैं
क्यों तुझे याद आ रहा हूँ मैं

मेरे ख़्याल से गुज़री है तू
ख़ुश्बू ख़ुश्बू हुआ ज़हन मेरा

काश ऐसा हो कोई तुझको ख़बर करे
मैं तेरे दीदार के फ़ाक़ों पे हूँ

तेरे बिन इक उम्र बितानी है मुझको
इक इक लम्हा लेकिन मुझ पर भारी है

तू अगर आदत मेरी होती तो तुझको छोड़ भी देता मगर
तू मुहब्बत है मेरी और तू बता कैसे मुहब्बत छोड़ दूँ

गर मिला सकता नहीं तू फिर मिलाया ही था क्यों
आशना करके हमें नाआशना क्यों कर दिया

आ धमकती हो मेरी सोचों में बिन पूछे कहे
मैं मुहब्बत भी करूँ तो डरते डरते पूछ कर

तुझको इतना चाहता हूँ, चाह रहा हूँ, चाहूँगा
इक तुझे चाहने के आगे कुछ नहीं चाहिए मुझे

तू अगर मिल जाए मुझको तो तेरा क्या जाएगा
न मिली तो मेरे दिल का फूल मुरझा जाएगा

दिन भर तेरे ख़्याल से मिलती नहीं निजात
रातों की मेरी नींद भी अब ले उड़ी हो तू

मैं यहाँ गर हूँ तो बस तेरे लिए
तू जहाँ में है तो बस मेरे लिए

अगर मैं टूट कर बिखरा तो तोहमत तुझपे आएगी
मैं टूटा तो हूँ पर ये सोचकर बिखरा नहीं हूँ मैं

बिछड़ना ही है गर तुमको मेरी रूह से निकल जाओ
जहाँ तक दिल का मस'ला है उसे समझा ही लूँगा मैं

तुझको पाने की तमन्ना न तुझे खोने का ख़ौफ़
हो गया हूँ मुत्मइन मैं बस तुझे मिलने के बाद

मुहब्बत करना मेरी फ़ितरत है रवैय्या नहीं
कि तू करे मुझको तभी तुझसे मुहब्बत मैं करूँ

हर जनम पहचान लेगी तू मुझे
रूह पर टैटू है तेरे नाम का

तुमको लगता है मैं शायद हर दम हँसता रहता हूँ
गले लगा कर देखना मुझको कैसे आँसू आते हैं

चाहूँ पर जज़्बात न हों प्यार करूँ पर बात न हो
इश्क़ में क्या-क्या रहीं पाबन्दियाँ मेरे लिए

प्यार करता हूँ मैं तुमसे है यही काफ़ी सुनो मेरे लिए
तुमसे मिलने के लिए बेताब तो बिल्कुल नहीं हूँ मैं

रात मेरे ख़्वाब में आई थी तू
अब तलक बिस्तर में है ख़ुश्बू तेरी

दुनिया भर की हर मुश्किल से लड़ जाऊँगा
तुम बस इतना कह दो देखो मैं हूँ ना

कान फटे पड़ते हैं मेरे बात करो
ख़ामोशी की आवाज़ें सुनता हूँ मैं

तुझमें मेरा कुछ न कुछ तो होगा ही
मुझमें तू सारी की सारी रहती है

खाता रहा मैं दुख तुम्हारे हिज्र का
वो तुम्हारा दुख ही मुझको खा गया

इतना ज़्यादा हूँ तेरा कि अब मैं अपना भी नहीं
इससे ज़्यादा और तेरा हो नहीं सकता हूँ मैं

कोई पूछेगा अगर तर्के-त'अल्लुक़ की वजह
मेरे मत्थे ही मढ़ेगी दोष सारा देखना

तुम्हारे लौट आने की रही उम्मीद कुछ ऐसी
कि मैंने ज़िन्दगी भर और का चेहरा नहीं देखा

पल पल ग़म के घूँट निगलने पड़ते हैं
यार हिज्र में जीना कुछ आसान नहीं

वो फल पक कर और किसी की झोली में जा टपका है
तुम कहते थे सब्र करो कि सब्र का फल मीठा होता है

तुम मुझसे यूँ मीठे-मीठे लहजे में न बात करो
मीठे लहजे वाले अक्सर वार पीठ पे करते हैं

ज़ेहन की मानूँ तो ये दिल मुझसे ख़फ़ा हो जाता है
दिल की बात सुनूँ तो मेरा ज़ेहन परेशाँ रहता है

तुमने अपनी ज़िन्दगी से मुझको ख़ारिज कर दिया
मुझसे पूछो लम्हा लम्हा कैसे गुज़रा है मेरा

तू तो बस तर्के-त'अल्लुक़ करके फ़ारिग़ हो गई
मैं सँभाले फिर रहा हूँ अब भी तेरी याद को

बहुत मुमकिन है मुझसे भी कोई ग़लती हुई होगी
मगर तुमने जो मेरे साथ किया अच्छा नहीं किया

मुझको यकीं था मेरा सहारा बनेगा वो
चल रही थी साँस तो कन्धा नहीं दिया

हम अन्दर से दोनों ही इक जैसे हैं
रूह से तू जिस्म का पर्दा हटा के देख

तेरी याद नहीं आती है अब मुझको
वो अब हर दम साथ मेरे ही रहती है

तुझे मिलने की शायद मैं कभी न इल्तिजा करता
मगर इस दिल की हालत मुझसे अब देखी नहीं जाती

उम्र भर सुलगूँगा तेरे बिन कि रिश्ता तोड़ कर
तूने इक गीली लकड़ी को आग लगा कर छोड़ा है

दिल ही मेरा ख़ैरख़्वाह है फिर भी तेरे वास्ते
बारहा दिल से भी अपने बदसलूकी की गई

मुझे दुख है बहुत दुख है मुझे सचमुच बहुत दुख है
कि तुझसे दूर रहकर भी अभी तक जी रहा हू मैं

तकलीफ़ में तो था मगर रोया नहीं
मुझको कभी माक़ूल सा कन्धा नहीं मिला

हो चुकी है इस क़दर तू जज़्ब मुझमें
ख़ुद से बाहर ढूँढता नहीं हूँ अब तुझे

अगले जनम में फिर से मिलने का अगर वादा करो
हँसते हँसते ज़िन्दगी को अलविदा कह जाऊँ मैं

हर पल तू ही याद आती है मुझे
काश मेरी याददाश्त चली जाए

सिर्फ़ मुहब्बत से नहीं भरता पेट मेरा
अब मैं तुमसे इश्क़ करना चाहता हूँ

दिल मनपसन्द शख़्स पर आने की बात है
क़ुर्बान सारी आरज़ूएँ, हसरतें सब ख़्वाहिशें

प्यार है तुझसे ये कहने पर कितनी ख़फ़ा हुई है तू
गर मैं कह दूँ प्यार नहीं है और ख़फ़ा हो जाएगी

तीसरी बरसी है कल जुदाई की
फिर अकेले ही मनानी है मुझे

छोड़ गई थी जहाँ मुझे मैं आज भी देखो वहीं खड़ा हूँ
तेरी तरह मूव ऑन तो कर ही नहीं सकता था मैं

ख़्वाब में ही आ के मिल जा तू कभी
पेट भर के देख लूँगा मैं तुझे

प्यार अगर इकतरफ़ा भी हो दिल को राहत देता है
इन्तज़ार इकतरफ़ा लेकिन जान ही लेकर रहता है

हो गई है याद इतनी तू मुझे
तुझको अब ता-उम्र भूलूँगा नहीं

तुमको भी अब नींद क्यों आती नहीं
जागती हो क्यों ख़्यालों में मेरे

बात बस इतनी सी है कि इन दिनों
हममें होती ही नहीं है बात भी

मैं तुम्हारी रूह तक महवे-सफ़र हूँ इन दिनों
खोल अपने दिल के दरवाज़े सभी मेरे लिए

तूने मेरी रूह को आवाज़ दी
हड़बड़ा कर मैं जगा हूँ ख़्वाब से

जितनी शिद्दत से मैं चाहता हूँ उसे
उसको मेरी हो ही जाना चाहिए

मुझको लगता था मुहब्बत के बिना मर जाऊँगा
अब ये लगता है मुहब्बत मार डालेगी मुझे

मुझको मुहब्बत का कैंसर हुआ है
मुहब्बत में इक रोज़ मर जाऊँगा मैं

सब्र का वो फल जो अब पकने वाला था
उसको इक ज़ालिम ने कच्चा तोड़ लिया

मुझ जैसा मिलना मुश्किल है लेकिन गर मिल जाए तो
उसके साथ वही मत करना जो कुछ मेरे साथ किया

तुझे मालूम था कि ये हमारा आपसी रिश्ता ख़ुदा की एक ने'मत है
त'अल्लुक़ तोड़ने से पहले थोड़ा सोच लेती तो गुनाह करने से बच जाती

मेरी ज़िद थी कि मैं निभा लूँगा
तेरा मक़सद तबाह करना था

हिज्र में जीना क्या होता है मरना क्या
मैंने तेरा हिज्र जिया है मुझसे पूछ

मैं कि था नायाब दुनिया के लिए
तूने नादानी में मुझको खो दिया

पी लिया मैंने मुहब्बत का ज़हर
ज़िन्दगी भर जी नहीं पाऊँगा मैं

मैं मुहब्बत में हूँ ऐसा मुब्तिला
मुझको मुहब्बत के कीड़े पड़ेंगे